ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

मई 2013

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम उद्‌घाटन समारोह

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम का उद्‌घाटन दिनांक 7 अप्रैल 2013 को आचार्य विजयपाल जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के कर कमलों से ध्वजारोहण के द्वारा किया गया। साथ में खड़े हैं सत्यानन्द आर्य, श्री सत्यपाल जी वत्स, स्वामी धर्ममुनि जी, श्री मनुदेव शास्त्री, डॉ. स्वामी आनन्द, आचार्य मैत्रेय तथा अन्य विद्वतगण

(विवरण पढ़े पृष्ठ 5 पर)

आश्रम उद्‌घाटन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि श्री श्रीओम अहलावत, बहादुरगढ़ जी को स्मृति चिन्ह द्वारा सम्मानित करते हुए दाएं से स्वामी धर्ममुनि जी, आचार्य विजयपाल जी, स्वामी हरीश मुनि, आचार्य मैत्रेय जी तथा श्री सत्यपाल जी वत्स

(विवरण पढ़े पृष्ठ 5 पर)

ओ३म् ओ३म्

आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

स्वामी धर्ममुनि जी की मौन साधना

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ व अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम, फर्रुखनगर के मुख्य अधिष्ठाता स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी ने दिनांक 15 मई से 30 जून तक मौन साधना का व्रत लिया है। कृपया इन दिनों में स्वामी जी से फोन द्वारा या कार्यक्रमों में आमन्त्रित करने का कष्ट न करें। विशेष कार्यहेतु सम्पर्क करें- आचार्य राजहंस मैत्रेय, 9813754084, विक्रम देव शास्त्री, व्यवस्थापक, 9896578062

आत्मशुद्धि पथ के नये आजीवन सदस्य बने

830

श्री संदीप आर्य
सुपुत्र श्री रणवीर सिंह
विवेकानन्द नगर, बहादुरगढ़

831

श्री सुशील कु. महाजन
वाटिकासिटी, सोहना रोड
गुड़गांव

832

श्री वीरेन्द्र कुमार
सुपुत्र श्री करतार सिंह
नूना माजरा, बहादुरगढ़

833

श्री राजेन्द्र अरोड़ा
प्रधान ऑटो मार्किट,
बहादुरगढ़

834 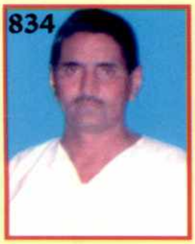

मा. परशुराम
सुपुत्र श्री रामपत
सैक्टर-6, बहादुरगढ़

835

श्री विद्यासागर
जागिड़, गुड़गांव

836

श्री सुधांशु
विजय पार्क, गुड़गांव

837

श्री अशोक शर्मा
37, चार मरला,
गुड़गांव

837

मा. धर्मवीर सिंह राठी
बहादुरगढ़

प्रिय बन्धुओं! मास मई में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी जून अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।

व्यवस्थापक

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

वैशाख सम्वत् 2070 मई 2013

सृष्टि सं. 1972949113 दयानन्दाब्द 189

वर्ष-12) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-5

(वर्ष 43 अंक 5)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'

आचार्य राजहंस मैत्रेय

❖

सह सम्पादक

स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, डॉ. मुमुक्षु आर्य

❖

परामर्श दाताः गजानन्द आर्य

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री

(8529075021)

❖

उपकार्यालय प्रबन्धक

ईशमुनि (9991251275, 9812640989)

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

व्यवस्थापकः चन्द्रभान चौधरी

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
आजीवन	: 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए)
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रुपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

दूर. : 01276-230195 चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,

rajhansmaitreya@gmail.com

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
विविध समाचार	4
वेद सन्देश	7
सम्पादकीय : मौन का महत्व	8
विवेकी को ध्यान का आश्रय	9
ईश्वर सिद्धि सम्बन्धी मन्तव्य और मैं	11
सर्वगुण सम्पन्न श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र	15
अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम उद्घाटन....	17
आस्तीन का सांप उच्च रक्तचाप	21
दिव्यगुणों से शरीर, मन व बुद्धि स्वस्थ होते हैं	23
हंसो-हंसाओ	25
कर्तव्यों के प्रति सदैव जागरूक रहें	25
मोतियों की लड़ी	26
श्राद्ध बनाम पितृ यज्ञ-श्राद्ध प्रतिदिन करना चाहिए	26
लड़की का अधिकार	26
भयानक रात	27
लाजवाब है दयानन्द	27
गायत्री महिमा गीत	28
प्रार्थना कैसी	29
गीता के कर्मयोग से कर्म-बोध	31
गणतन्त्र वीर विनायक दामोदर की 130वीं जयंती	33
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

महर्षि दयानन्द एजुकेशनल सोसायटी (पंजीकृत) के महर्षि दयानन्द प्राईमरी स्कूल का उद्घाटन 13.04.2013

आर्य समाज मन्दिर की यज्ञशाला में दैनिक यज्ञ सरस्वती सूक्त के मन्त्रों की आहुतियों के साथ सम्पन्न हुआ जिसमें यजमान के रूप में श्री रवि हसीजा, श्री धर्मवीर हसीजा, श्री पूरण चन्द कपिला, श्री सतीश परुथी सपत्नीक श्री जयदेव हसीजा, श्री धर्मपाल मैनी, श्रीमती नीलम भाटिया, श्रीमती उमा कपूर सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। यज्ञ के ब्रह्मा श्री कन्हैया लाल आर्य वरिष्ठ उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा ने सभी यजमानों को आशीर्वाद दिया एवं यज्ञ सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम पंडाल में दीप प्रज्जवलन के साथ वैदिक मन्त्रों सहित स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी, बहादुरगढ़ स्वामी धर्मदेव जी महामण्डलेश्वर, मुख्य अतिथि हुड्डा के प्रशासक डॉ. प्रवीण कुमार शिक्षा विद डॉ. धर्मपाल मैनी, सोसायटी के प्रधान, श्री खजान सिंह एडवोकेट उपप्रधान, श्री जयदेव हसीजा, श्री महावीर सिंह, श्री कर्मवीर सिंह द्वारा हुआ।

स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी संचालक आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ एवं फर्रूखनगर तथा स्वामी धर्मदेव जी महामण्डलेश्वर संचालक संस्कृत महाविद्यालय पाटौदी ने आशीर्वाद प्रदान किया।

सोसायटी के प्रधान श्री खजान सिंह एडवोकेट ने बताया कि यह सब व्यवस्था सोसाइटी के उप्रपधान श्री जयदेव हसीजा, सचिव श्रीमती नीलम भाटिया, कोषाध्यक्ष श्रीमती उमा कपूर जी के बलबूते पर ही चल रही है मुझे इन्होंने जो मुझे मान दिया हुआ है। इनके लिए मैं इन सबका आभारी हूं। इसके अतिरिक्त श्री कन्हैया लाल आर्य वरिष्ठ उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, एयर कमोडोर श्री सी.एम. सिंगला, कर्नल श्री गुरुनाम सिंह, कर्नल श्री सुरेश नौटियाल, श्री सतीश परूथी, श्री पूरण चन्द कपिला, अभिलाषा ग्रुप की सभी सदस्याओ सभी दानियो एवं सहयोगियों का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। शान्ति पाठ, विद्यालय के विधिवत उद्घाटन एवं ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

– जयदेव हसीजा, वानप्रस्थ उपप्रधान

वेदराही ''साहित्य सुमन'' मानद उपाधि से सम्मानित

मानव संसाधन (राजभाषा) अनुभाग के अवर अधिकारी (राजभाषा) शिवकरण दुबे वेदराही को उनकी साहित्यिक उपलब्धियों एवं सेवाओं के फलस्वरूप पराविद्या संस्थान द्वारा संचालित हिन्दी विकास सेवा संस्थान-काशीनगर (उ.प्र.) द्वारा 'साहित्य सुमन' की मानद उपाधि से समलंकृत किया गया है। ज्ञातव्य है कि आज एवं परम्परा के कवि शिवकरण वेदराही गहन वैदिक अध्येता, अंग्रेजी-हिन्दी अनुवादक एवं लेखकीय कार्यो से जुड़े हिन्दी साधक हैं। साहित्य, काव्य रचना, समीक्षा तथा हिन्दी कार्यशालाओं में व्याख्यान के साथ वेदराही आकाशवाणी में वार्ताकार एवं कवि के रूप में प्रसारित हो चुके हैं। अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में शिरकत के साथ वेदराही योग एवं आयुर्वेद के क्षेत्र में गहन अध्ययन रखते हैं। इनके ओज एवं परम्परा के गीतों का प्रसारण आकाशवाणी ओबरा से भी हुआ है।

आश्रम समापन समारोह सम्पन्न

महाशय अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फुर्रुखनगर गुड़गांव आश्रम का उद्घाटन समारोह दिनांक 7/4/2013 रविवार को आचार्य विजयपाल जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की अध्यक्षता में यज्ञ भजन और सत्संग के साथ उत्साह पूर्वक सम्पन्न हो गया प्रात: 9 बजे से आचार्य राजहंस मैत्रेय जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्री अम्बरीश जी झाम सपत्नीक गुड़गांव, श्री दिनेश कुमार आर्य सपत्नीक गुड़गांव,श्रीमती ब्रह्मादेवी धर्मपत्नी मा. हरीसिह जमालपुर व श्री छोटेलाल साल्हावास ने यजमान आसनों को सुशोभित किया। इस अवसर पर आचार्य जी ने यज्ञ की महिमा पर बोलते हुए कहा कि यज्ञ विष्णु है, जो सबका पालन-पोषण करता है। और इसकी वैज्ञानिक प्रक्रिया पर विस्तार से प्रकाश डाला। स्वामी धर्ममुनि जी ने सामूहिक रूप से यजमानो को आशीर्वाद दिलाया तत्पश्चात प्रसाद वितरण किया गया। प्रात:10:30 बजे आश्रम उद्घाटन समारोह का शुभारम्भ हुआ। इसमे मुख्य अतिथि श्रीओम अहलावत जी, विशिष्ट अतिथि श्रीमती कांता कौशिक, श्रीमती सीमा पाहुजा पार्षद गुड़गांव रहे। प्रमुख वक्ता स्वामी रामानन्द, स्वामी आनन्द, आचार्य राजहंस मैत्रेय, योगाचार्य रामजीवन जी श्री शिवकुमार जी मदान आदि विद्वानों ने विद्वतापूर्ण मानव निर्माण एवम् राष्ट्रीय उन्नति पर विशेष प्रकाश डाला। इस अवसर पर स्वामी हरीश मुनि जी, श्री जगवीर जी, श्रीमती प्रीति आर्या, पं. रमेशचन्द्र जी, गुरुकुल लोवां कला की ब्रह्मचारिणिया,और आर्य समाज मंदिर सी ब्लाक जनकपुरी की छात्राओ ने सुन्दर एवं मनमोहक भजनो का कार्यक्रम रखा। कापसहेड़ा गांव से बस लेकर आये आर्यो ने अपने नगाड़े को बजाकर सभी में उत्साह का संचार किया। इस अवसर पर विभिन्न लोगो को सामाजिक कार्यो के लिए सम्मानित किया गया। आचार्य विजयपाल जी ने ओजस्वी एवं प्रभावशाली अध्यक्षीय भाषण दिया। आश्रम के मुख्याधिष्ठाता स्वामी धर्ममुनि जी ने अपना आशीर्वाद रूपी उदबोधन दिया। और सभी संन्यासियो विद्वानो दानियों, कार्यकर्ताओं और गुड़गांव, दिल्ली, झज्जर, बहादुरगढ, कन्या गुरुकुल लोवाकला, कन्या गुरुकुल जसात आदि स्थानों से आये हुए सभी सज्जनों तथा श्रोताओं का हार्दिक धन्यवाद किया। अंत में भूमिदाता ईशमुनि जी का सभी के लिए हार्दिक आभार प्रकट किया। मंच संचालन श्री राजवीर सिंह आर्य ने प्रेरणाप्रद शिक्षाएं देकर कुशलता पूर्वक किया। भंडारे की व्यवस्था विक्रमदेव शास्त्री एवम् हरिओम आर्य ने कुशलता पूर्वक की। हजारों लोगों ने स्वादिष्ट भोजन का आनन्द लिया। आश्रम के सुरम्य स्थान एवं सफल कार्यक्रम को देखकर उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

प्रवेश प्रारम्भ

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फरूखनगर, गुड़गांव में कक्षा 4 से 10वीं तक गुरुकुल प्रारंभ किया जा रहा है। जिसमें आधुनिक विषयों के साथ गुरुकुलीय शिक्षा एवं संस्कार भी दिए जाएंगे। प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थी सम्पर्क करें- आचार्य राजहंस मैत्रेय, 9813754084

आवश्यकता

आवश्यकता है **एक सेवानिवृत मुख्य अध्यापक** जो गुरुकुल में छात्रों की सेवा करना चाहते हैं। भोजन, आवास, गुरुकुल में ही रहेगा। **एक अनुभव कुशल वार्डनर** (संरक्षक) छात्रों के लिए आवश्यकता हैं जो जो छात्रों को सुबह 4:30 बजे से रात्रि 9:00 बजे तक पूरी दिनचर्या चला सके। उचित वेतन, भोजन, आवास की व्यवस्था है। **एक निपुण रसोईया** की शीघ्र आवश्यकता है जिसको आवास, भोजन और उचित वेतन दिया जायेगा। सम्पर्क करें- आचार्य राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084, विक्रम देव शास्त्री, मो. 9896578062

नेत्र चिकित्सा शिविर सम्पन्न

राष्ट्र धर्म और मानवता के सबल रक्षक वेद यज्ञ योग साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरबढ़ में नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर दिनांक 20/04/2013 को उत्साह पूर्वक सम्पन्न हो गया वेणु आई इन्स्टीट्यूट एण्ड रिसर्च सेन्टर के कुशल डाक्टरों एवं उनकी टीम द्वारा 200 रोगियों की कुशलता पूर्वक जांच की गयी तथा 25 रोगियों को आपरेशन के लिए चुना गया शिविर का उदघाटन श्री दर्शन जी अग्निहोत्री मन्त्री आश्रम ट्रस्ट एवं डाइरेक्टर डि लाइट काम लिमिटेड द्वारा किया गया। शिविर स्वामी धर्ममुनि जी द्वारा के निर्देशन में चला शिविर बहादुरगढ केआस पास के गांव के लोगों ने विशेष रूप से भाग लिया इस अवसर पर श्री राजवीर जी आर्य आचार्य राजहंस मैत्रेय योगनिष्ठ सत्यपाल जी वत्स आदि गण मान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। शिविर की व्यवस्था विक्रमदेव शास्त्री ने की।

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलें ओ३म् आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलें

जीवन रूपान्तरण के लिए स्वर्णिम अवसर

❑ तनावपूर्ण वातावरण में सुखद व प्रसन्नता पूर्ण जीवन विज्ञान के लिए। ❑ महत्वाकांक्षा रूपी पागल दौड़ से उत्पन्न बैचेनी व अशान्ति की मुक्ति के लिए। ❑ दुःख व सुख के विज्ञान की मनौवैज्ञानिक प्रक्रिया जानने हेतु। ❑ पारिवारिक सम्बन्धों में प्रेम व सौहार्द की स्थापना के लिए। ❑ आधुनिक व्यवस्था में स्वातन्त्र्य पूर्ण जीवन के लिए। ❑ मानवीय शत्रु काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि से मुक्ति के लिए। ❑ जगत के प्रति करूणा और आत्मिक सौन्दर्य के विकास के साथ प्रभु से सहज, सरल सम्मिलन के लिए।

राष्ट्र धर्म व मानवता के सबल रक्षक वेद, यज्ञ योग साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम की ज्ञानगंगा में स्नान हेतु सात दिवसीय पावन ऊर्जामय

निःशुल्क ध्यान योग विज्ञान शिविर एवं बृहद्यज्ञ

सोमवार 24 जून 2013 सायं 4 बजे से रविवार 30 जून 2013 तक

शिविराध्यक्ष एवं यज्ञ ब्रह्माः-आचार्य राजहंस मैत्रेय, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़

आसन, प्राणायाम प्रशिक्षणः- योगनिष्ठ सत्यपाल जी वत्स, बहादुरगढ़

प्रवक्ताः डॉ. मुमुक्षु आर्य, नोएडा, आर्य तपस्वी सुखदेव जी, दिल्ली, आचार्य खुशीराम जी, दिल्ली, योगाचार्य रामजीवन जी, रंगपुरी, स्वामी रामानन्द सरस्वती, आचार्य रविशास्त्री

भजनोपदेशकः पं. रमेशचन्द्र जी कौशिक झज्जर, श्रीमती प्रीति आर्या बहादुरगढ़, योगसाधिका रामदुलारी बंसल और आश्रम के ब्रह्मचारी

दिनचर्याः सोमवार 24 जून 2013 को **शिविर उद्घाटन** सायं 4 बजे

मंगलवार 25 जून 2013 प्रातः 5 से 7 बजे तक **ध्यान योग साधना पश्चात् आसन प्राणायाम प्रशिक्षण** 7:30 बजे से 10 बजे तक **यज्ञ भजन उपदेश**, 11 बजे से 12:30 बजे तक **योग दर्शन स्वाध्याय, शंका समाधान**

मध्यांह्नोपरान्त 3 बजे से 5 बजे तक **यज्ञ भजन उपदेश**, 5:30 से 7 बजे तक **साधना**

रात्रि 8:30 बजे 9:30 बजे तक **शंका समाधान व मल्टीमीडिया हॉल में धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन**

नोट- शिविरार्थी अपना आवश्यक सामान कॉपी, पैन, योगदर्शन, टॉर्च आदि साथ लेकर आए। ❑ भोजन, आवास की व्यवस्था आश्रम की ओर से निःशुल्क रहेगी। ❑ शिविरार्थी आने से पूर्व मो. 9416054195 पर सूचित अवश्य करें।

संयोजकः ईश मुनि जी

निवेदक

स्वामी धर्ममुनि जी
संस्थापक एवं मुख्य अधिष्ठाता आश्रम

श्री सत्यानन्द आर्य
प्रधान ट्रस्ट

विक्रमदेव शास्त्री
व्यवस्थापक आश्रम

दर्शन कुमार अग्निहोत्री
मन्त्री ट्रस्ट

आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ (पंजीकृत) ट्रस्ट एवं सर्व सदस्यगण

सब यज्ञों का महान् तत्त्व विश्वतोधार होना

- आचार्य अभयदेव वेदालंकार

स्वर्यन्तो नापेक्षन्तऽआ द्याम् रोहन्ति रोदसी।
यज्ञं ये विश्वतोधारं सुविद्वांसो वितेनिरे॥
यजु. 17.68. अथर्व. 4.14.4

ऋषिः-**भृगुः॥** देवता-**आज्यम्ः॥** छन्दः-**अनुष्टुप॥**

शब्दार्थ- ये=जो **सुविद्वांस**=उत्तम ज्ञानी महापुरुष **विश्वतोधारं यज्ञम्**=विश्वतोधार यज्ञ को, सबको सब ओर से धारण करने वाले यज्ञ को **वितेनिरे**=विस्तृत करते हैं वे **स्वः यन्तः**=आनन्दमय स्थिति को जाते हुए **न अपेक्षन्त**=किसी अन्य वस्तु की अपेक्षा नहीं करते या नीचे नहीं देखते, **रोदसी**=वे द्यावापृथिवी को लाँघकर **द्याम्**=द्युलोक में **आरोहन्ति**=चढ़ जाते है।

विनय-हमारे सब यज्ञ 'विश्वतोधार' होने चाहिए, पर प्रायः हमारे यज्ञ एकतोधार होते हैं। इसका अर्थ यह है कि हम दूर तक देखकर, सब संसार को दृष्टि में रखकर लोकोपकार नहीं करते, अतः हमारे ये यज्ञकार्य परिमित, अदूरगामी और एकपक्षीय होते हैं। हम केवल अपने समाज, अपने कुटुम्ब, केवल एक संस्था या केवल अपने देश व राष्ट्र के हित के लिए अपने उपकार-कार्य करते हैं और उनके लिए बड़े-बड़े स्वार्थ-त्याग तक करते हैं पर यह ध्यान नहीं रखते कि वह संस्थाहित, देशहित, वह राष्ट्रहित संसार के हित के भी अविरूद्ध होना चाहिए। विश्वतोधार यज्ञ वह है जो 'सर्वभूतहित' के लिए होता है, जो सम्पूर्ण विश्व के भले के लिए प्राणिमात्र के हित की दृष्टि से होता है, अथवा यूँ कहें कि जो परमात्मा की प्रीत्यर्थ होता है। वही यज्ञ पूरी तरह फैला, विस्तृत होता है, व्यापक होता है। वही यज्ञ 'विष्णु' कहाता है। पर यज्ञ के इस 'विष्णु', 'विश्वताधार' रूप में संसार में कुछ उत्तम ज्ञानी ही समझते हैं और ये विरले ही उसे विस्तृत करते हैं, अतः ये 'सुविद्वान' तो शीघ्र ही पृथिवी और अन्तरिक्ष के स्थूल और मानसिक लोकों को लाँघकर आत्मा के सुखमय और प्रकाशमय लोक में चढ़ जाते हैं, आसानी से पहुँच जाते हैं। वे उस आत्मिक सुख की ओर जाते हुए, उसका आनन्द लेते हुए दुनिया की किसी भी अन्य वस्तु की परवाह नहीं करते। 'विश्वतोधार' यज्ञ करने वालों को 'स्वः का एक ऐसा दृढ़ अवलम्बन मिल जाता है कि वे फिर संसार के अन्य किसी भी सहारे की तनिक भी अपेक्षा नहीं करते। चाहे उनके साथी उनसे छिन जाएँ, उनका प्रभुत्व नष्ट हो जाए, उनकी सब प्रतिष्ठा जाती रहे, पर वे इन सहारों के रखने के लिए भी कभी अपने यज्ञ को थोड़ी देर के लिए भी छोटा, अव्यापक नहीं करते। वे अपनी दृष्टि को कभी नीची या संकुचित नहीं करते। ऊपर चढ़ते हुए नीचे की क्षुद्र चीजों पर कभी उनकी दृष्टि ही नहीं पड़ती। यही रहस्य है जिससे वे ऊपर-ऊपर ही जाते हैं और शीघ्र सुखमय-प्रकाशमय द्युलोक में जा पहुँचते है। - वैदिक विनय से सभार

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. बाल कल्याण सदन के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. बाल कल्याण सदन के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 2000/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं।

कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें।

धन्यवाद! -व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 01276-230195, 9416054195

सम्पादकीय

मौन का महत्व

प्रिय पाठक बन्धुओ! अनेकों बार कई सज्जनों द्वारा वार्ता मध्य चर्चा की गई कि स्वामी जी आप प्रतिदिन तीन घंटे मौन क्यों रहते हैं? मौन रहने का क्या महत्व है, क्या लाभ है? उन सज्जनों की इच्छापूर्ति के लिए संक्षेप में लिखने का प्रयास किया है। वास्तव में सत्य तो यह है कि यह विषय गूंगे के गुड़ की मिठास के समान है। गूंगा गुड़ की मिठास बताने में असमर्थ है, वह खाने की ओर संकेत करता है, वैसे ही आप भी मौन रहने का अभ्यास करके लाभ उठा सकते हैं और महत्व समझा सकते हैं। अस्तु।

पाठकवृन्द! कहावत प्रसिद्ध है–'एक चुप सौ सुख', 'मौन सर्वार्थ साधकम्'। जब हम जागृत अवस्था में मौन रहते हैं तब अन्दर से अपनी आत्मा-परमात्मा के साथ और बाहर से प्रकृति के साथ होती है। मौन रहने से हमारी शारीरिक एवं मानसिक ऊर्जा संचित रहती है और प्रसन्नचित्त रहते हैं। मौन में रहने के कारणों से जब साधक चुप रहता है तब अन्दर की विशाल दुनिया के साथ होता है। 'यथा ब्रह्माण्डे तथा पिण्डे'। मौन रहने से साधक कई प्रकार की वाक्- त्रुटियों से भी बच जाता है, क्योंकि अधिक बोलने से अनावश्यक बातें भी प्रकट हो जाती हैं और बिना किसी कारण के ही अनावश्यक बातों के जंजाल में फँसकर अपनी ऊर्जा और समय को नष्ट कर बैठते हैं। मौन से ही हमारी आत्मा शुद्ध होती है। मौन ही हमारे ज्ञान एवं विवेक को ऊर्जावान बनाकर सही रास्ता दिखाता है। कुछ प्रश्नों के उत्तर मौन से ही हल होते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन में आता है वेदभाष्य करते समय जब कोई अर्थ समझ में नहीं आता तो मौन होकर एकान्त में बैठ जाते तुरन्त प्रश्न हल हो जाता, आकर पंडितों से लिखवा देते।

सुनो भाई! मौन में साधक की उत्कृष्ट भावनाएं उत्पन्न होती हैं जो साधक को शांति आनन्द और प्रेम का भाव सिखाती हैं। मौन की भाषा बहुत प्रभावी होती है और व्यक्तिगत जीवन को भी निखारती है। थोड़ा विचार करें कि हम सदा यादों की दुनिया में रहते हैं, जनता के साथ रहते हैं और अपने मन पर बिना किसी कारण हजारों भावनाएं, आकांक्षाएं ढोए फिरते हैं। प्रत्येक मननशील व्यक्ति को शांत रहना और मौन रहना सीखना चाहिए, जिससे मन को विश्राम मिले, तनाव रहित हो। मौन के समय हमारा मन अत्यधिक सुलझा हुआ रहता है और यह संसार जैसा साफ-साफ है, वैसा दिखाई देता है। मौन में रहकर व्यक्ति अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने की साधना कर सकता है। जब बोले बिना मनुष्य शान्तचित्त होता है तब अर्द्ध जाग्रत मानसिक अवस्था होती है। जिस लक्ष्य कार्य में वह सफलता प्राप्त करना चाहता है वह सूचना अर्द्ध जाग्रत मौन अवस्था में ही दी जा सकती है, क्योंकि इस अवस्था में वह सूचना मन में अंकित हो जाती है और उसी दिशा में काम करने लग जाता है।

प्रिय मित्रो! यह एक शाश्वत सत्य है कि मन एक नदी के समान है। नदी की धारा की भाँति मन की धारा भी होती है। इस धारा को मनुष्य संसार की ओर से बहाये या प्रभु की ओर बहाये इसमें वह स्वतंत्र है परन्तु फल भोगने में परतन्त्र है। मन में सद्गुणों के साथ दुर्गुण भी हैं। यह जिधर बहता है उधर बहता ही चला जाता है। जब यह विषय वासनाओं में संसार सुख की ओर बहता है तब उधर ही बहता है। उस समय मौन आदि साधना की ओर इसका ध्यान ही नहीं जाता। सौभाग्य से कहीं सत्संग-स्वाध्याय का अवसर मिल जाता है। तब मौन साधना प्रभु की ओर बहने लगती है। तब संसार सुखों से किनारा कर लेता है। नदी के दो किनारों की भाँति मन के भी दो किनारे होते हैं। लोक और परलोक। मन यदि सतोगुणी हो तो दोनों किनारे हरे-भरे होते हैं और उसमें रजागुण की बाढ़ आ जाये तो दोनों किनारे बह जाते हैं, न लोक का रहता है न परलोक का। किसी ने बहुत सुंदर कहा है, 'जिसका बिगड़ा लोक उसका बिगड़ा परलोक, जिसका सुधरा लोक, उसका सुधरा परलोक।' इस बाढ़ को रोकना ही मौन साधना द्वारा साधक का कर्तव्य है। जैसे नदी के टूटे किनारों को बाँधकर पानी रोका जाता है वैसे ही मौन साधना द्वारा मन के इधर-उधर भटकने से रोकना है। मन को दबाना नहीं मन को साधना है। मन को संसार से तोड़ो, मोड़ो और प्रभु से जोड़ो। यह जब होगा मौन के महत्व को समझकर जीवन में अपनाने और अभ्यास करने से। हम चौबीसों घंटे बोल-बोलकर बक-बक करके बाहरी दुनिया से सुख, शांति और सफलता चाहते हैं, जबकि यह हमें मौन रहकर मिलता है। एक बात अन्त में स्पष्ट कह देना चाहता हूं कि अधिक बोलने वाला व्यक्ति कभी भी सुख शक्ति आनंद को प्राप्त नहीं कर सकता। शंकराचार्य जी से किसी ने प्रश्न किया–'जितं जगतं केन?' उत्तर दिया– 'मनो हि येन।'

इस संसार को किसने जीता? जिसने मन को जीत लिया, उसने संसार को जीत लिया।

–धर्ममुनि

विवेकी को ध्यान का आश्रय

सांख्य दर्शन-गतांक से आगे-

-राजहंस मैत्रेय, आचार्य आत्मशुद्धि आश्रम

पिछले अंक में प्रतिदिन आने वाली समस्याओं के समाधान के लिए किये जाने वाले उपायों को पुरुषार्थ तो कहा परन्तु परम पुरुषार्थ नहीं कहा क्योंकि साधारण उपायों से दु:खों की पूर्ण निवृत्ति नहीं होती। इस विषय पर लिखा गया।

अब द्:ख दूर करने के साधारण उपाय को शास्त्रकार ने हेय माना है क्यों ? इसका इस सूत्र द्वारा उत्तर दिया जा रहा है।

सर्वासंभवात् संभवेऽपि सत्तासंभवाद्धेय: प्रमाणकुशलै: ॥4॥

पदार्थ- सर्वासंभवात्=साधारण उपायों द्वारा सम्पूर्ण दु:खों का दूर होना संभव नहीं। **संभव अपि**=संभव होने पर भी **सत्तासंभवात्**= दु:खों की मूल सत्ता बनी रहने से **प्रमाणकुशलै:**=विद्वान् पुरुषों को **हेय:**=छोड़ने योग्य है। अर्थात् लोक प्रसिद्ध दु:ख दूर करने वाले उपायों से सम्पूर्ण दु:ख दूर नहीं होते यदि मान भी लिया जाये कि दु:ख दूर होते हैं तो दु:खों की मूल सत्ता बनी रहती है इसलिए विवेकी लोगों के लिए इस तरह के उपाय त्याज्य हैं। महर्षि कपिल ने इस सूत्र द्वारा हमारी आंखे खोलने का प्रयास किया है। इस सूत्र में तीन बातें कही गयीं हैं। **पहली बात**- जगत प्रसिद्ध भोजन, ओषधि मनोविज्ञान, वैज्ञानिक उपायों एवं अन्य आवश्यक साधनों द्वारा दु:खों की पूर्ण निवृत्ति असंभव है। सभी तरह के साधन सम्पन्न और शक्तिशाली लोगों में पूर्ण दु:खों की निवृत्ति कभी नहीं देखी गयी। इससे सिद्ध होता है कि लोक प्रसिद्ध दु:ख दूर करने के उपाय पूर्ण दु:ख निवृत्ति में असमर्थ हैं। **दूसरी बात**- यह मान भी लिया जाये कि लौकिक और वैदिक प्रयास यज्ञादि अनुष्ठानों से दु:ख दूर भी होते हैं तो भी उनकी मूल सत्ता सूक्ष्म रूप से बनी रहती है इसलिए कहा जा सकता है कि लौकिक उपाय दु:ख दूर करने में पूर्ण प्रभावी नहीं हैं । **तीसरी बात**- समझदार विवेकी विद्वानों को इन लौकिक उपायों पर निर्भर न रहकर ध्यान योगाभ्यास का आश्रय लेना चाहिए। थोड़ा भी समझदार व्यक्ति इन तीनो बातों से सहमत तो होगा परन्तु इस सूत्र के अनुसार व्यावहारिक नहीं होगा क्योंकि अभी उसे इसका अभिप्राय आत्मसात नहीं हुआ इसलिए हजारों की संख्या में लोग सभी तरह के शास्त्रों को तो पढ़ जाते हैं परन्तु अभी लौकिक उपायों द्वारा ही दु:खो को दूर करने में लगे हुए रहते हैं इसलिए उनके जीवन में कोई उन्नति कोई परिवर्तन नहीं देखा जाता। ऐसे लोगो को लौकिक उपायों को छोड़ कर परम उपाय अर्थात ध्यान योगाभ्यास करना चाहिए। जो नहीं कर पाते हैं उन्हें देर अबेर यह अनुमान से स्पष्ट हो जाता है कि लौकिक उपाय सम्पूर्ण दु:खों को दूर करने में असमर्थ हैं। फिर ऐसे ही लोग उस उपाय की खोज करते हैं जो सम्पूर्ण दु:खों को नाश करता हैं। अन्यथा तो लोग अपनी ही आवश्यकताओं को महत्वपूर्ण मान कर उन्हें ही दूर करने में लगे रहते हैं इस तरह आवश्यकताओं का सिलसिला लगा रहता है और उन्हीं को पूरा करने में मानव पूर्ण आयु को प्राप्त होकर चला जाता है।

अब लौकिक उपायों का गौड़ होना अगले सूत्र द्वारा बताया जाता है -

उत्कर्षादपि मोक्षस्य सर्वोत्कर्षश्रुते: ॥5॥

पदार्थ-मोक्षस्य= मोक्ष के **उत्कर्षात् अपि**= उत्कर्ष से भी **सर्वोत्कर्षश्रुते:**=श्रुतियां उसे सर्वश्रेष्ठ कहती हैं अर्थात् मोक्ष के उत्कर्ष से भी उसकी महिमा सिद्ध है। वेद द्वारा भी मोक्ष को सर्वश्रेष्ठ कहा गया है।

मोक्ष की अनुभूति के लिए किए जाने वाला पुरुषार्थ भी परम पुरुषार्थ कहा गया है मोक्ष शब्द का भी अर्थ होता है दु:खो से पूरी तरह छूट जाना। साधारण लोगों का पुरुषार्थ केवल लौकिक उपायों में ही होता है जो पर्याप्त नहीं इसलिए लोगो को दु:ख रहित नहीं देखा जा सकता कुछ महानतम् लोगों की अनुभूति और वेद की घोषणा है मोक्ष। जहां पूर्व कथित तीनों प्रकार के दु:खो से छूटा जाता है अत: उसी की अनुभूति के लिए परम पुरुषार्थ है। अन्य सब सामान्य है। अब तीनों प्रकार

के दुःखों को दूर करने में लौकिक और वैदिक उपायों की समान असमर्थता दिखाते हैं।

अविशेषश्चोभयोः॥6॥

पदार्थ- उभयोः=लौकिक और वैदिक उपायों की दुःखों के पूर्ण नाश में **अविशेषः**=कोई विशेषता नहीं। अर्थात् लौकिक उपाय भोजन, ओषधि तथा अन्य साधन और वैदिक उपाय यज्ञ मन्त्र जापादि दोनों प्रकार के उपायों से तीनों प्रकार के दुखों की अत्यन्त निवृत्ति में समान रूप से कोई विशेषता नहीं है। अर्थात् दोनों ही समान रूप से असमर्थ हैं। क्योंकि लौकिक उपायों से पूर्ण दुःख की निवृत्ति नहीं यह प्रत्यक्ष देखने में मिलता है। वैदिक उपायों द्वारा अर्जित पुण्य का फल सुख प्राप्ति है उसको भोगने के पश्चात व्यक्ति पुनः सामान्य हो जाता है इसलिए लौकिक और वैदिक उपाय की दुःख निवृत्ति में कोई विशेषता नहीं क्योंकि दोनों ही उपाय विवेक ज्ञान उत्पन्न करने में असमर्थ हैं।

अब आशंका की जाती है कि पुरुष का बन्धन स्वाभाविक है या नैमेत्तिक यदि स्वाभाविक है तो उसके लिए मोक्ष के साधनों का उपदेश युक्त नहीं। इसी की चर्चा की जाती है-

न स्वभावतो बद्धस्य मोक्ष साधनोपदेशविधिः॥7॥

पदार्थ-स्वभावतः= स्वभाव से **बद्धस्य**= बन्धन में पड़ी हुई आत्मा के लिए **मोक्ष साधनोपदेशविधिः** = मोक्ष प्राप्ति के उपदेशों का विधान **न** = ठीक नहीं अर्थात् यदि आत्मा का स्वाभाविक रूप से बन्धन है तो मुक्ति के उपदेशों का विधान ठीक नहीं।

इसका कारण इस सूत्र द्वारा बताया गया **-स्वभावस्यानपायित्वादननुष्ठानलक्षणमप्रमाण्यम्॥8॥**

पदार्थ-स्वभावस्य =स्वभाव का **अनुपायित्वात्**=न हटने के कारण **अन् अनुष्ठान लक्षणम्**= हटाने का प्रयास **अप्रमाण्यम्** =प्रमाण हीन होता है अर्थात स्वभाव का न हटने के कारण उसे हटाने का प्रयास प्रमाणहीन है। पदार्थो में स्वाभाविक और नैमेत्तिक दो प्रकार के धर्म पाये जाते है स्वभाविक का अर्थ है वह पदार्थ का ही स्वरूप है उसे पदार्थ से अलग नही किया जा सकता

यदि अलग करेंगे तो वह पदार्थ या वह वस्तु नहीं रहेगी जैसे अग्नि में दाहकता कका गुड़ स्वभाविक है इसे अग्नि से दूर नहीं किया जा सकता और नैमेत्तिक वह गुण है।जिसे पदार्थ और वस्तु से अलग किया जा सकता है जैसे किसी वस्त्र को रंग देना फिर विभिन्न रासायनिक घोल के द्वारा उस रंग को छुड़ा देना ऐसे ही यदि आत्मा का बन्धन स्वाभाविक है तो उसको नहीं हटाया जा सकता और उसके बन्धन को हटाने का प्रयास करना असंगत और प्रमाणहीन है तथा उसका फल भी कुछ नही होता अब दूसरा कारण उपस्थित किया जाता है ।

न शक्योपदेशविधिरुपदिष्टेऽप्यनुपदेशः॥9॥

पदार्थ- न=नहीं **अशक्योपदेशविधिः**=असंभव का विधान **उपदिष्टेऽपि**= उपदेश होने पर भी **अनुपदेशः**=अनुपदेश है अर्थात् जो हो नही सकता उसका करने के उपदेश का विधान नहीं। वह उपदेश होकर भी अनुपदेश है।

अब यह प्रश्न होता है कि आत्मा का स्वाभाविक बन्धन मानने पर उसकी निवृत्ति की संभावना है:-

शुक्लपटवद् बीजवच्चेत्॥10॥

पदार्थ- शुक्लपटवत्= श्वेतवस्त्र की स्वाभाविक श्वेतता दूर रंग से **च**= और **बीजवत्** = बीज की स्वाभाविक अंकुर जनन शक्ति अग्नि से दूर कर दी जाती है **चेत्**= यदि ऐसा मान लिया जाये तो अर्थात् जैसे श्वेत वस्त्र को दूसरे रंग से रंग देने पर उसकी स्वाभाविक श्वेतता दूर हो जाती है और बीज की अंकुर जनन शक्ति अग्नि से दग्ध कर देने पर उसकी अंकुर जनन शक्ति नष्ट हो जाती है उसी तरह आत्मा को स्वाभाविक बद्ध मानकर उसका बन्धन विवेक द्वारा हटाया जा सकता है यहां स्वाभाविक गुण धर्म को दूर करने का निर्देश नहीं अपितु वस्तु के धर्मो का तिरो भाव और आविर्भाव को प्रकट किया गया है।

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम ''दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर''। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, दूरभाष: 01276-230195 चलभाष: 9416054195

ईश्वर सिद्धि सम्बन्धी मन्तव्य और मैं

– अभिमन्यु कुमार खुल्लर

अमेरिका प्रवास में एक आत्मीय ने कहा– आर्यसमाज और ईश्वर को अपने पास ही रखिए। अंग्रेजी की एक पुस्तक देते हुए कहा– इसे पढ़िए। आपको मालूम हो जायेगा कि मनुष्य का मस्तिष्क किस प्रकार काम करता है। एक ही बात दोहराते रहिए। मस्तिष्क में उस बात की ध्वनि-प्रतिध्वनि होती रहेगी। यदि ओ३म् का बारम्बार उच्चारण करते रहेंगे तो आपको लगेगा कि आप और ओ३म एकाकार हो गये हैं। तत्काल एक विचार मस्तिष्क में कौंध गया कि महर्षि भी प्रणव का एक हजार बार जाप करने का आदेश करते थे। पुस्तक पढ़ने की हिम्मत ही नहीं हुई इस भय से कि कहीं ईश्वर विश्वास की चूलें ही न हिल जायें। ईश्वर पर विश्वास का आधार क्या है? जब हम उसे निराकार, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापक स्वीकार कर चुके हैं तो संकट पड़ने पर हमारा उस पर से विश्वास क्यों हिल जाता है? इसके अतिरिक्त यह विचार भी जड़ पकड़ रहा था कि ईश्वर को मानने वाले क्या उसे जान-समझकर ही मानते हैं अथवा विरासत में मिले संस्कारों के कारण मानते हैं और पूजते हैं। ये प्रश्न मन-मस्तिष्क को उद्वेलित करने लगे। संकट तो गहरा हो चुका था। चिन्ता तो लग चुकी थी।

ईश्वर सिद्धि विषयक साहित्य पढ़ने लगा। पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय का ग्रन्थ 'आस्तिकवाद' स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती का Man and his Religion महर्षि के पूना प्रवचन (प्रथम प्रवचन ईश्वर सिद्धि पर दिया गया है।), शास्त्रार्थ महारथी द्वय पं. रामचन्द्र देहलवी और पं. गणपति शर्मा के शास्त्रार्थ, सत्यार्थ प्रकाशका सप्तम् सम्मुल्लास। सप्तम् सम्मुल्लास का एक ही प्रश्नोत्तर मेरी समस्या के अनुरूप लगा। सुलभ सन्दर्भ के लिए यथावत् यहां उद्घृत कर रहा हूं।

प्रश्न– आप ईश्वर, ईश्वर कहते हो परन्तु उसकी सिद्धि किस प्रकार करते हो?

उत्तर– सब प्रत्यक्षदि प्रमाणों से।

प्रश्न–ईश्वर में प्रत्यक्षादि प्रमाण कभी नहीं घट सकते।

उत्तर– गौतम महर्षि कृत न्यायदर्शन के सूत्र के अनुसार जो श्रोत, त्वचा, चक्षु, जिव्हा, घ्राण और मन का शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, सुख-दुःख, सत्यासत्य विषयों के साथ सम्बन्ध होने से ज्ञान उत्पन्न होता है। उसको प्रत्यक्ष कहते हैं परन्तु वह निर्भ्रम हो। अब विचारना चाहिए कि, इन्द्रियों और मन से ''गुणों'' का प्रत्यक्ष होता है 'गुणी' का नहीं। जैसे चारों त्वचा आदि इन्द्रियों से स्पर्श, रूप, रस और गंध का ज्ञान होने से गुणी जो पृथ्वी है, उसका आत्मायुक्त मन से प्रत्यक्ष किया जाता है वैसे इस 'प्रत्यक्ष सृष्टि'' में रचना विशेषादि ज्ञानादि गुणों के प्रत्यक्ष होने से परमेश्वर का भी प्रत्यक्ष है। और जब आत्मा और मन इन्द्रियों को किसी विषय में लगाता व चोरी आदि बुरी व परोपकार आदि अच्छी बात के करने का जिस क्षण में आरम्भ करता है, उस समय जीव की इच्छा, ज्ञानादि उसी इच्छित विषय पर झुक जाता है। उसी क्षण में आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में, भय, शंका और लज्जा तथा अच्छे कामों के करने में अभय, निःशंकता और आनन्दोत्सव उठता है। वह जीवात्मा की ओर से नहीं परमात्मा की ओर से है।

क्या सटीक तराजू दी है महर्षि ने। क्या इसको कोई झुठला सकता है?

पूना में दिया गया प्रथम प्रवचन ईश्वर सिद्धि विषयक था। इसमें भी महर्षि ने सृष्टि रचना का उदाहरण देकर ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध किया।

ईश्वर=परम पुरुष=सनातन ब्रह्म सब पदार्थो का बीज है। रचना रूपी कार्य दिखता है। इस पर से अनुमान होता है कि, इस सृष्टि को रचने वाला अवश्य कोई है। पंचभूतों की सृष्टि आप ही आप रची हुई नहीं है क्योंकि घर का सामान विद्यमान होने से ही घर नहीं बन जाता, यह हमारा देखा हुआ अनुभव सर्वत्र है। साथ ही साथ पंचभूतों का मिश्रण नियमित परिमाण से विशिष्ट कार्य उत्पन्न होने की ही सुगमता के लिए कभी भी आप स्वयं घटित नहीं होता। इससे स्पष्ट है कि सृष्टि की व्यवस्था जो हम देखते हैं उसका उत्पादक और नियन्ता ऐसा कोई 'श्रेष्ठ पुरुष' अवश्य होना चाहिए।........

प्रत्यक्ष रीति से 'गुण' का ज्ञान होता है। गुण का अधिकरण जो 'गुणी' द्रव्य है, उसका ज्ञान प्रत्यक्ष रीति से नहीं होता। इसी प्रकार ईश्वर सम्बन्धी गण का ज्ञान चेतन और अचेतन सृष्टि द्वारा प्रत्यक्ष होता है। इसी पर से ईश्वर संबंधी 'गुण' का अधिकरण जो ईश्वर है, उसका ज्ञान

होता है, ऐसा समझना चाहिए। इसे स्पष्ट करने के लिए ऋग्वेद का मंत्र बोला-

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।। सदाधार पृथ्वीं द्यामुतेमां, कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय अपने सुप्रसिद्ध ग्रंथ "आस्तिकवाद" में ईश्वर सिद्धि के लिए विश्व के समस्त मानव समुदाय में 'धर्मभाव' या 'आस्तिकता' अर्थात् अपने से उच्चतर शक्ति में विश्वास निरुपति करते हैं। उपाध्याय जी के सुपुत्र अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती एवं आनन्द स्वामी जी महाराज ईश्वर की सर्वोत्तम कृति मानव शरीर रचना की विशद व्याख्या कर ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करते हैं। शास्त्रार्थ महारथी द्वय पंडित रामचन्द्र देहलवी एवं पं. गणपति शर्मा सृष्टि रचना का उदाहरण देकर ईश्वर के अस्तित्व को समझाते हैं।

भौतिकी के वैज्ञानिक लगभग 50 वर्ष से ब्रह्माण्ड की संरचना के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रयासरत हैं सर्न वेधशाला में चल रहे प्रयोगों से एक कारक परमाणु का पता चला है जो हवा में तैरते हुए परमाणुओं को घनत्व-ठोस रूप प्रदान करता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि 'बिग बैंग' के बाद सभी परमाणु उड़ते रहे होंगे। इसी सर्जक परमाणु ने उनमें प्रवेश कर पृथ्वी, सुर्य, चन्द्रादि ग्रह-नक्षत्रों का निर्माण किया होगा। अतः यही परमाणु कण जिसे वह 'गॉड पार्टिकल' कहते हैं, विधाता है। सर्वप्रथम ब्रिटिश वैज्ञानिक पीटर हिग्स ने इस तथ्य की घोषणा 1965 में की। भारतीय वैज्ञानिक केशवचन्द्र बोस ने इस सिद्धान्त का समर्थन किया। इसलिए इसे हिग्स-बोसन सिद्धान्त कहते हैं।

आर्य पत्र-पत्रिकाओं में प्रो. स्वतन्त्र कुमार-आर्य-मर्यादा 26-29 जुलाई 2012), आचार्य राधामोहन उपाध्याय (आर्य संसार-सितम्बर 12) श्री हरिशचन्द्र वर्मा वैदिक (आर्य जगत 16-22 सितम्बर 12) के लेख प्रकाशित हुए है। निश्चित रूप से वैदिक विद्वान स्थूल-अणु-परमाणु को सृष्टि रचयिता स्वीकार नहीं कर सकते। कारण स्पष्ट है कि रचना के लिए सचेतन की आवश्यकता होती है। वैज्ञानिकों के अन्वेषण-परीक्षण अभी चल रहे हैं।

अपने लेख में प्रो. स्वतन्त्र कुमार ने ब्रह्म को इस प्रकार निरुपति किया है-"सर्वव्यापी तन्तु सचेतन ऊर्जा"। सचेतन, निराकार, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापक ब्रह्म को समझानेवाली यह परिभाषा मेरे मन-मस्तिष्क पर छा गई। 'परम पुरुष', 'परमात्मा' आदि विशेषणों से अधिक स्पष्ट होने लगी। महात्मा नारायण स्वामी महाराज ने भी इस बात को और स्पष्ट किया। उन्होंने ब्रह्माण्ड रचना के असंख्य नियमों को 'ऋत', 'तन्तु' बताया है। ये सार्वभौमिक और सार्वकालिक नियम ही उस सचेतन शक्ति के परिचायक हैं।

इस दार्शनिक विवेचन के परिपेक्ष्य में यह उल्लेखनीय है कि, ईश्वर के अस्तित्व के संबंध में महर्षि दयानन्द के समक्ष कोई समस्या उत्पन्न नहीं हुई थी। उनके समक्ष यह प्रश्न उपस्थित हुआ था कि मूर्ति ईश्वर है अथवा मूर्ति में ईश्वर है या नहीं। यह प्रश्न उठा विदवत्वर पं. गुरुदत्त विद्यार्थी एवं मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) के समक्ष। यह कहना यथार्थ नहीं कि महर्षि के प्रयाण के दृश्य ने नास्तिक गुरुदत्त को आस्तिक बना दिया। 19 वर्षीय पं. गुरुदत्त विद्यार्थी आर्यसमाज लाहौर के सभासद थे और आर्य समाज लाहौर के उपप्रधान लाला जीवनदास के साथ महर्षि की दारूण रूग्णावस्था का समाचार पाकर अजमेर भेजे गये थे। क्या उस युग में एक नास्तिक आर्यसमाज का सभासद हो सकता था? संशयवादी अर्थात ईश्वर का अस्तित्व है अथवा नहीं, इसका उन्हे निश्चय नहीं हुआ था। रही बात मुंशीरामजी (स्वामी श्रद्धानन्द) की तो उनका महर्षि दयानन्द से बरेलीवाला वार्तालाप स्मरण कीजिये। मुंशीराम ने कहा था कि आपने (स्वामी दयानन्द) मुझे तर्कों से तो पराजित कर दिया लेकिन ईश्वर पर विश्वास नहीं दिलाया। महर्षि ने उत्तर दिया- तुमने प्रश्न पूछे, मैंने तुम्हें उत्तर दिये। मैंने कब कहा था कि मैं तुम्हें ईश्वर पर विश्वास दिला दूंगा। ईश्वर पर विश्वास तो तुम्हें तब होगा जब तुम्हारे ऊपर ईश्वर की कृपा होगी। महर्षि के इस कथन से स्फटिक की तरह स्पष्ट है कि ईश्वर पर विश्वास के लिए ईश्वर की कृपा की अत्यन्त आवश्यकता है। क्या नासमझ को या ईश्वर को जाने बिना मानने वाले पर ईश्वर की कृपा हो सकती है? यदि इस तथ्य को भी स्वीकार कर लें कि ईश्वर अपनी कृपा दिखाने में भेदभाव नहीं करता तो भी यह निर्विवाद रूप से स्पष्ट रहेगा कि वे (नासमझ, जाने बिना मानने वाले) उस कृपा को समझ ही नहीं पायेंगे। और न उससे आत्मोन्नति के मार्ग में लाभान्वित हो सकेंगे।

काफी लम्बे समय के पश्चात् मुंशीराम पर ईश्वर की कृपा हुई। शराब के नशे में दुत्त मुंशीराम अपने एक मित्र के घर पहुंचे। फिर शराब का दौर चला। थोड़ी देर में मित्र उठकर घर के अन्दर चला गया। कुछ देर बाद किसी

नारी का आर्तनाद सुनकर मुंशीराम अन्दर गये। देखते हैं कि एक अबला मित्र के हाथों में छटपटा रही है। मुंशीराम ने अपने नराधम मित्र को दोनों हाथ पकड़ कर धकेल दिया और वह नारी उसके पंजे से छूटकर अंदर भागी। स्वामी श्रद्धानन्द अपनी आत्मकथा 'कल्याणमार्ग का पथिक' में लिखते है उस समय मेरे नेत्रों के समक्ष पत्नि शिवदेवी और महर्षि दयानन्द उपस्थित हो गये। महर्षि ने कहा- मुंशीराम! क्या अब भी परमेश्वर पर तेरा विश्वास न होगा? अर्थात् किस अदृश्य शक्ति ने घोर रात्रि के बीच इस अबला नारी का सतीत्व बचाने के लिए तुझे भेजा? महर्षि का स्पष्ट आशय यही था कि ईश्वरीय प्रेरणा से ही तुम यहां उपस्थित हुये। प्रभु अपने अस्तित्व को इसी तरह सिद्ध करता है।

रही गुरुदत्त की बात। मिल आदि पाश्चात्य दार्शनिकों के ग्रंथो का प्रणयन करने के पश्चात् उनकी वृत्ति संशयात्मक हो गई थी- ईश्वर है अथवा नहीं है? अजमेर पहुंचने पर महर्षि को मृत्युशैया पर लेटे हुए देखा। रात्रि भर वे डॉ. लक्ष्मणदास के साथ महर्षि की शैया के समीप बैठे रहे। डॉ. लक्ष्मणदास के अनुरोध पर अजमेर के सिविल सर्जन डॉ. न्यूमेन को बुलाया गया। वे महाराज पर रोग के प्रचण्ड आक्रमण किन्तु रोगी की अनन्य, अतिमानवीय सहनशीलता को देखकर स्तम्भित रह गये। उन्हें अतीव आश्चर्य हुआ कि इस भीषण स्थिति में भी कोई रोगी ऐसी दारूण वेदना को असीम धैर्यपूर्वक सहन कर सकता है!!!।

बायपास करने की जरूरत नहीं

दिल की बंद नसे खोलने का युनानी नुस्खा।

1. नींबू का रस एक प्याली, 2. अदरक का रस एक प्याली, 3. लहसुन का रस एक प्याली, 4. सेब का सिरका एक प्याली।

सबको मिलाकर धीमी आंचपर गर्म करो, एक प्याली सुखकर तीन प्याली बच जाये तो उतारकर ठंडा करो, फिर उसमें तीन प्याली शहद डालकर अच्छी तरह से हिलाकर मिक्स करो और साफ बोतल में भरकर रखो ये दवाई निहारपेट तीन चमचे पियें। इससे दिल की बंद (ब्लॉक) नसें खुल जायेंगी और आप एन्जोप्लास्टी/बायपास करने से बच जायेंगे। **- श्री देवेन्द्र मलिक**

गुरुदत्त टकटकी बांधे महर्षि के महाप्रयाण को देख रहे हैं। पूरे शरीर में फफौले निकल रहे हैं। गले के अन्दर तक फफौले पड़ गये है और बार-बार शौच जा रहे हैं। पेट में भयंकर पीड़ा हो रही है और महर्षि पूर्णतया शांत। न कोई आह, न कोई ऊह। गुरुदत्त के मन में विचार बार-बार कौंध रहा था कि कौनसी अदृश्य शक्ति इस भीषण अवस्था में महर्षि के मन व इन्द्रियों पर अटूट नियंत्रण प्रदान कर रही थी। ऐसा प्रयाण निष्णात् योगी, ईश्वर के परम विश्वासी का ही हो सकता है। सदैव के लिए ईश्वर के संबंध में संशय की स्थिति समाप्त हो गई। ईश्वर की सत्ता पर पूर्ण विश्वास हो गया। जान लिया कि ईश्वर क्या है। उपरोक्त दोनों उदाहरणों से स्पष्ट है ईश्वर पर विश्वास ईश्वर की कृपा से ही संभव है। ईश्वर कृपा किस तरह करता है, यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए पृथक हो सकता है। राजा भोज के लिए भेजे गये हत्यारों के हृदय में मासूम, निरपराध भोज की हत्या न करने की प्रेरणा देकर। सब ओर से निराश, हताश, परिवार की भोजन व्यवस्था करने में भी असमर्थ महाराणा प्रताप के समक्ष यकायक 'भामाशाह को उपस्थित कर लौटते हुए महाराणा प्रताप की हत्या करने के लिए पीछा करते हुए मुगल सैनिकों का विद्रोही भाई शक्तिसिंह से वध कराकर।

वेद मर्मज्ञ, आचार्य प्रवर शिवनारायण उपाध्याय (कोटा) ने इस विषय में एक भिन्न संदर्भ में मुझे लिखा-"ईश्वर पर विश्वास केवल तर्कपूर्ण भाषा में उसकी सिद्धि करने मात्र से नहीं हो जाता। उसके लिए जीवन में घटने वाली आश्चर्यजनक घटनाओं का बड़ा हाथ होता है। मैंने स्वयं जीवन में अनुभव किया है कि किस प्रकार वह हमेशा हमारी सहायता के लिए उपस्थित रहता है। वास्तव में प्रयत्न करके आप उसे नहीं जान सकते।" यथार्थ में हम सब भी अपने-अपने जीवन में इस वास्तविकता से परिचित होते हैं।

प्रारम्भ से लेकर अब तक इस लेख में मैंने ब्रह्म को, ईश्वर को जानने समझने की अपने मन-मस्तिष्क की प्रक्रिया को दर्शाया है। गुणीजन, सुधीजन को यह सब विवरण जाना पहचाना समझा हुआ लगे पर मैं कब उनके लिए लिखता हूं मेरा लेखन तो स्वयं मुझ जैसे सामान्य बुद्धिवालों के लिए है जो विद्वानों की दुरुह शब्दावली से कुछ समझ ही नहीं पाते। मुझे इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में से निकलने पर शक्ति मिली है। मेरा मनोबल, आत्मविश्वास बढ़ा है।

पर प्रश्न खड़ा है- ईश्वर को समझने, जानने, मानने वाले का जीवन कैसा होना चाहिए। महर्षि बारम्बार 'दुरितानि परासुव' क्यों कहते हैं। इस पर विचार करने से पूर्व मैं देखता हूं- ईश्वर को जाना-माना महर्षि दयानन्द ने। उनसे प्रेरणा पाकर जाना-माना पंडित लेखराम, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी और स्वामी श्रद्धानन्द ने। न केवल इन लोगों की ही काया पलट गई बल्कि जनमानस की भी काया पलटने की सामर्थ्य परमपिता परमात्मा से प्राप्त की। मेरी अल्पमति में स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज इसी श्रेणी में परिगणित किए जा सकते हैं। अन्य अनेक विद्वान एवं सन्यासी भी इसी श्रेणी की पात्रता रखते होंगे। उनका मूल्यांकन करने की भी योग्यता मुझमें नहीं है। मैंने तो स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज को छोड़कर उन्हीं दिवंगतों का नाम लिया है जिन्होंने महर्षि दयानन्द के समान ही सर्वस्व न्यौछावर कर उन्हीं जैसी गति पाई।

प्रश्न आज के वैदिक धर्मियों का है जो ईश्वर के इस स्वरूप को जानने व मानने का दावा करते हैं। सम्पूर्ण विश्व में इनकी संख्या लगभग 50-75 लाख होगी। यह विशाल जनसंख्या सम्पूर्ण विश्व का चारित्रिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य बदलने के लिए पर्याप्त है। पर यह जन क्या दावा कर सकते हैं कि भ्रष्टाचार, अनैतिकता, कर्तव्य निर्वहन के प्रति निष्ठा का अभाव उनमें नहीं है। परिवार में एक दूसरे के प्रति प्रेम आदर का भाव है। कन्या भ्रूण हत्या के दोषी नहीं है। पारिवारिक झगड़े और मुकदमेबाजी नहीं है। यदि ये सब बाते हैं तो 'कृण्वन्तो विश्मार्यम' का नारा लगाना कोरी गलेबाजी नहीं तो क्या है? यदि सम्पूर्ण अर्थ में 'आर्य'- श्रेष्ठ नहीं बन सकते तो कुछ गुण ही अपना लीजिए। समाज में आप अलग दिखेंगे। वे गुण आपको वैशिष्ट्य प्रदान करेंगे। आप श्रद्धा व प्रीति का पात्र बनेंगे। लेकिन हम आज देखते हैं कि इनमें से एक बड़ा वर्ग आर्यसमाज को ही रसातल पर पहुंचाने के लिए कटिबद्ध है। यह वर्ग वैदिक धर्मी है ही नहीं। इस वर्ग का प्रवेश आर्यसमाज के नेतृत्व की अदूरदर्शिता का परिणाम है। महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज स्थापित किया था अपनी विरासत को सहेजने, सम्हालने व वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार को तीव्र गति प्रदान करने के लिए। यह तो हुआ ही नहीं, हम महर्षि को ही घोल कर पी गए।

- 22, नगरनिगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर-474001

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	23.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	28.00	रु. प्रति किलो
विशेष	45.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	65.00	रु. प्रति किलो
सुपर डीलक्स	120.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

सर्वगुण सम्पन्न श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र

–राजवीर सिंह आर्य, बहादुरगढ़

गतांक से आगे

सीता के उक्त वचन सुनकर बलशाली रावण ने क्रोध में भरकर सीता को केशों से पकड़ दोनों जंघांओ से उठा और अपने दिव्य रथ पर बैठा दिया। रावण से हरण की हुई सीता ने जोर-जोर से हा राम! हा राम! पुकारा और लक्ष्मण को भी बार-बार पुकारा कि मेरी रक्षा के लिए शीघ्र आओ। इस प्रकार करूणामय विलाप करती हुई अत्यन्त दु:खी, विशाल नेत्रों वाली सीता ने फिर महात्मा जटायु को देखा और कहा कि "हे महात्मा! यह पापी राक्षस मुझे अनाथ की भांति ले जा रहा है। हे जटायु! यद्यपि आप मुझे इस निशाचर से नहीं छुड़ा सकते हैं लेकिन मेरे प्रिय भर्ता राम और उसके भाई लक्ष्मण को सम्पूर्ण वृतान्त बता देना।" सीता के इस प्रकार पुकारने पर उस वृद्ध जटायु ने रावण को कहा कि "हे दशग्रीव! अपने सनातन धर्म में स्थित रहो, हे भ्राता तुझे ऐसा निन्दित कर्म नहीं करना चाहिए, यह लोकहित में तत्पर दशरथ पुत्र राम की यस्विनी धर्मपत्नी है। धर्म में स्थित राजा परस्त्री को कदापि नहीं छू सकता। तुझे अपनी स्त्रियों की भांति ही इसकी भी रक्षा करनी चाहिए। यद्यपि मैं वृद्ध हूं और तु युवा है, धुर्नधारी है, रथ सहित है तथा कवच पहने हुए है फिर भी मैं तुझे सीता को नहीं ले जाने दूंगा। यदि तू शूरवीर है तो एक मुहुर्त भर ठहर युद्ध कर जैसे तेरा भाई खर युद्ध में मारा गया है इसी प्रकार तू भी मारा जाएगा। लेकिन पता ना वे दोनों भाई कहीं दूर निकल गए, तू उनसे भयभीत हुआ कायरों की तरह भाग रहा है। मेरे जीते जी तू इस कमल नेत्री राम की प्यारी को नहीं ले जा सकता। जब तक मेरे शरीर में प्राण है तब तक मैं तेरा अतिथि सत्कार करूंगा।"

जटायु के उक्त वचनों को सुनकर क्रोध में लाल हुआ रावण उसकी तरफ दौड़ा। जटायु ने बहुत वीरता दिखाई लेकिन रावण ने तलवार से उसकी दोनो भुजाओं को काट दिया। भुजाओं के कटने से जटायु भूमि पर गिर पड़ा। जटायु की यह अवस्था देखकर वह चन्द्रमुखी बहुत विलाप करने लगी और जटायु की तरफ दौड़ी और कहा कि "हे राम! यह पुरुष विशेष जटायु मेरी रक्षा करते हुए अपने प्राणों को त्याग रहा है।" इसके पश्चात रावण ने शीघ्रता करते हुए सीता को फिर से पकड़, विलाप करती हुई को विमान तुल्य रथ में बैठाकर आकाश मार्ग से ले गया। सीता ने रावण को धिक्कारते हुए कहा कि "हे नीच, तुझे लज्जा नहीं आती? जो मुझ अकेली

को जान तू चोरों की भांति चुरा कर ले जा रहा है। तुझ कायर ने मृग रूपी छल द्वारा मेरे प्रिय पति को मुझसे बहुत दूर करके और मेरे ससुर महाराजा दशरथ का सखा जब मेरी रक्षा के लिए उद्यत हुआ तो उस वृद्ध गृद्ध राज को भी तूने मार दिया।

(त्रिवंश स. श्लोक 2,3,4)

हे राक्षस1 इस लोक में सदैव तेरे इस दुष्कर्म की निन्दा हुआ करेगी। हे नीच रावण तू जिस विचार से मुझे बलपूर्वक हर ले जा रहा है, वह सब तेरा निरर्थक होगा। मैं चिरकाल तक अपने प्राणों को धारण नहीं कर सकूंगी। हे रावण! नि:सन्देह तू अपनी भलाई को भी नहीं देखता जैसे मृत्यु के निकट आया हुआ व्यक्ति पथ्य नहीं देखता है।"

टिप्पणी:- यहाँ एक बहुत महत्वूपर्ण विषय आया है कि जटायु नाम के एक पक्षी (गिद्ध) ने रावण द्वारा हरण की जा रही सीता को छुड़ाने का प्रयास किया था। हम निम्नलिखित संवाद से इसका समाधान करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

प्रश्नकर्ता: क्या जटायु नामा जो गृद्ध थे वे पक्षी थे? क्या वे मनुष्यों की तरह बोलते थे? क्या उनमें भी मनुष्यों की तरह बुद्धि थी? क्या उस समय के पशु-पक्षी वायुयान (विमान) चलाना, गद्दा युद्ध करना आदि सब कलाएं जानते थे?

उतरदाता: अरे आप इतना भी नहीं जानते, क्या आपने रामचरितमानस को नहीं पढ़ा है? क्या आपने रामानन्द सागर द्वारा बनाई गई रामायण के सीरियल को भी नहीं देखा है? आपको पता होना चाहिए कि सत्युग

और त्रेतायुग में पशु पक्षी भी मनुष्यों की तरह ही व्यवहार करते थे। उनमें बुद्धि भी होती थी। लो हम आपको तुलसीदास जी द्वारा रचित चौपाई से समझाने का प्रयत्न करते हैं-

चोचन्ह मारि बिदारेसि देही। दंड एक भई मुरुछा तेरी॥
तब सक्रोध निसिचर खिसियाना। काढेसि परम कराल कृपाना॥
काटेसि पंख परा खग धरनी। सुमिरि राम करि अद्भुतकरनी॥

अर्थात् जब रावण द्वारा हरि जाती हुई सीता को जटायु ने देखा तो उसने रावण को ललकारा, ना रूकने पर उसे चोंच द्वारा घायल कर दिया और फिर रावण ने अति क्रोधित होकर अपने विमान को नीचे उतारा और अपनी तलवार से उसके दोनों पंखों को काट भयंकर रूप से घायल कर सीता को लेकर चला गया।

प्रश्नकर्ता: मेरे भाई अगर सत्युग और त्रेता में ऐसा होता था तो अब पशु-पक्षी ऐसा व्यवहार क्यों नहीं कर रहे हैं? क्या इससे परमपिता परमात्मा न्यायकारी सिद्ध होते हैं?

उतरदाता: परमात्मा की महिमा किसने जानी, यह है गुरुओं की वाणी।

प्रश्नकर्ता: नहीं मेरे भाई! अन्धकार से प्रकाश में आओ। अज्ञान से ज्ञान में आओ। परमपिता परमात्मा तो सदैव न्यायकारी हैं और उन्होनें मनुष्यों को कर्मयोनि और पशु-पक्षियों व कीट-पतंगो को भोग योनि बनाया है। इसीलिए तुम्हारी बात बुद्धिसंगत नहीं है। हम आपको सत्य जानकारी दे रहे हैं जो कि इस प्रकार है।

जटायु नामा और सम्पाति दो सगे भाई थे। बहुत विद्वान और कुशल विमान चालक (पायलट) थे। महाराजा दशरथ के दोनों भाई विशेषतौर पर जटायु नामा गहरे मित्रों में से रहे थे। ग्रद्य देश के राजा भी थे और अपनी सनातन परम्परा के अनुसार राज्यभार त्याग कर तपस्वियों की तरह दण्डक वन में रह रहे थे। रामायणकालीन कुछ प्रसिद्ध जातियाँ (गौत्र) हुए हैं जो इस प्रकार हैं-

वानर, ऋक्ष, राक्षस, निशाद, शबर, गृदध आदि जिसे हम अज्ञानता से अर्थ का अनर्थ कर अपनी इच्छा से इतिहास का निर्माण कर लेते हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि लोग उसे काल्पनिक कहने लग जाते हैं। फिर हम कहते हैं कि हमारी भावनाओं को ठेस पहुंच रही है। देखों हम वाल्मिकी रामायण के प्रमाणों सहित यह सिद्ध कर रहे हैं कि जटायु नामा (जिसके बड़े-बड़े केश थे) एक व्यक्ति थे।

जटायोपश्य मामार्य हियमाणामनाभवत।

(अष्टाविंश सर्ग श्लोक 21)

अर्थात् हे आर्य जटायु! यह राक्षस मुझे अनाथ की भांति हर कर ले जा रहा है और फिर जटायु रावण को सम्बोधित करता है-हे दशग्रीव, सनातन धर्म में स्थित को ऐसा निन्दित कर्म नहीं करना चाहिए। यद्यपि मैं वृद्ध हूँ और तू युवा। तब उन दोनों का आकाश में युद्ध होता है और रावण अपने विमान को उतारने पर विवश हो गया।

(स तदा गृ ध्रराजेन (गृदृध राज) क्रिश्यमानों मुहुर्मुतः)

यहां विशेष बात यह है कि सीता जी विलाप करती हुई जटायु को आर्य शब्द से सम्बोधित करती है। वह इसी शब्द से लक्ष्मण और राम को भी सम्बोधित करती थी। आर्य श्रेष्ठ पुरुष को कहते हैं ना कि किसी पशु-पक्षी को। देखिए महाभारत काल में भी आर्य उसको कहते थे जो अपने सुख में बहुत प्रसन्न नहीं होता और दूसरों को दुःख में खुशियां नहीं मनाता। जो अभिमान नहीं करता। दान देकर पश्चाताप नहीं करता, जो कभी निन्दित कर्म नहीं करता वह आर्य चरित्र वाला सत्पुरुष कहलाता है। म.उद्योग पर्व 33.117 ऋग्वेद के अनुसार भी अहम भूमिमाददामि आर्योय, 4.46.2 अर्थात् यह भूमि भगवान ने आर्यो के लिए दी है, फिर जटायु कैसे पक्षी हो सकता है? क्या पक्षी कभी ऐसी बुद्धिमतापूर्वक बातें कर सकते हैं? क्या वे एक कुशल पायलट हो सकते हैं? क्या वे तपस्वियों की तरह रह सकते हैं?

उत्तरदाता- भाई आपने जो उपरोक्त बातें मुझे बताई उनमें सच्चाई प्रतीत होती है। वास्तव में हम तो अभी तक इन बातों को जानते ही नहीं थे, आपने हमारा बहुत सा भ्रम दूर कर दिया, इसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ और आगे भी सत्य इतिहास के जानने के लिए मैं बड़ा उत्सुक हूँ।

प्रश्नदाता:- हम समय-समय पर अपनी सामान्य बुद्धि अनुसार आपको रामायण सम्बन्धि सत्य इतिहास का ज्ञान कराते रहेंगे जिससे हमारे पूर्वजों के उपर किसी प्रकार का लांच्छन ना लगे और हमें उनके जीवन चरित्र से प्रेरणा भी मिलती रहे।

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम उद्घाटन समारोह की झलकियां

(विवरण पढ़े पृष्ठ 5 पर)

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम उद्घाटन समारोह की झलकियां

(विवरण पढ़े पृष्ठ 5 पर)

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम उद्घाटन समारोह की झलकियां

(विवरण पढ़े पृष्ठ 5 पर)

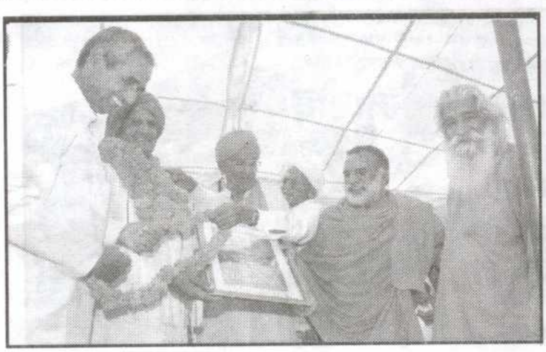

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम उद्घाटन समारोह की झलकियां

(विवरण पढ़े पृष्ठ 5 पर)

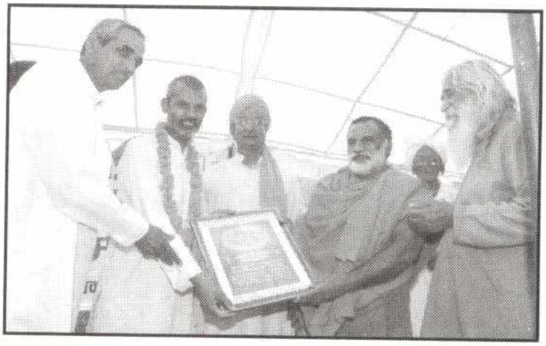

आस्तीन का सांप उच्च रक्तचाप

- डा. आर.के.शर्मा

(गतांक से आगे)

अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि विशेष प्रकार की ध्वनि तरंगे मस्तिष्क की लिम्बिक प्रणाली के आनन्द केन्द्रों (प्लेजर सेन्टर्स) पर सीधा प्रभाव डालकर भावानात्मक अनुभूतियों को नियंत्रित करती है। ऐसा देखा गया है कि मस्तिष्क के इस भाग में आनन्द की अनुभूति से पीयुषग्रंथि एण्डोर्फिन नामक एक रस का रिसाव करने लग जाती है। एण्डोर्फिन नामक यह तंत्रिका रसायन शरीर का प्राथमिक दर्दनाशक जैसा कार्य करता है। अच्छा संगीत मस्तिष्क में कैटा कोलामाइन और एड्रीनेलिन जैसे रसायनों का स्राव रोक कर रक्तचाप को नियंत्रित करते हैं। यह स्ट्रेस हॉर्मोन है तथा इनकी बढ़ी हुई मात्रा हृदय गति, रक्त दबाव और फैटी अम्लों की मात्रा में वृद्धि करती है, जबकि इनके स्तर में कमी होने से हृदय रोगों, रक्तचाप, माइग्रेन जैसे रोगों की आशंका कम रहती है।

संगीत के इस सिद्धान्त को ध्यान में रखकर ऐसी विशेष ध्वनियों वाली अनेक ओडियो-वीडियो कैसेट्स तैयार कर ली गई हैं, जिन्हें सुनने मात्र से रक्तचाप घटने लग जाता है। इनके 7 से 10 दिन के उपयोग से ही 20-25 अंक का रक्तचाप गिर जाता है।

कुछ अन्य अध्ययनों में देखा गया है कि संगीत के साथ श्वसन संबंधी कुछ क्रियाओं का अभ्यास भी जोड़ दिया जाये तो रोगियों पर बिना दवाओं के ही चमत्कारिक प्रभाव पड़ता है। इनसे रक्तचाप, हृदय की धड़कन भी सामान्य होती है और रोगी के स्वास्थ्य में तेजी से सुधार आने लगता है। इनसे उनकी याद्दाश्त भी बढ़ने लग जाती है। एकाग्रता आती है तथा अनिद्रा की समस्या भी दूर हो जाती है।

आयुर्वेदिक उपचारः

आयुर्वेदिक प्रणाली में ऐसी कई जड़ी-बूटियों का उल्लेख है जो उच्च रक्तचाप और हृदय रोगों पर बहुत ही चमत्कारिक असर डालती है। गोटा केला, शंखपुष्पी, पुनर्नवा मूल, अर्जुन और छोटी चन्दन आदि कुछ ऐसा जड़ी-बूटियाँ हैं जिनको कुछ दिन सेवन करने से उच्च रक्त सामान्य होने लगता है तथा रोगी के स्वास्थ्य में तेजी से सुधार आता है। यदि इन चारों का एक साथ कुछ अन्य उपायों के साथ प्रयोग किया जाये तो रोगी के रक्तचाप में स्थायी रूप से आराम मिल जाता है।

गोटा कोला में तीव्र तनाव शामक यौगिक मौजूद रहते हैं, जो तनाव को शीघ्र समाप्त करके, मन में प्रसन्नता भर देते हैं। अध्ययनों से पाया गया है कि गोटा कोला में 'हर्पेपोनिन' नामक एक सक्रिय यौगिक रहता है। यह सीधे ही मस्तिष्क स्थिति पीयुष ग्रंथि पर प्रभाव डालकर सिरोटोनिन नामक न्यूरोहार्मोन के स्त्राव को बढ़ाने लगता है। यह सिरोटोनिन सचेतन की स्थिति बढ़ाते हैं तथा मस्तिष्क क्रियाओं को सामान्य करते हैं गोटा कोला के सेवन से मस्तिष्कीय तनाव से छुटकारा मिलता है तथा स्मरण शक्ति में वृद्धि होती है।

शंखपुष्पी को प्राचीन समय से ही मस्तिष्क को बलवान बनाने वाली हर्बल के रूप में जाना जा रहा है। हालिया अध्ययनों से भी यह बात सामने आयी है कि शंखपुष्पी के सेवन से विश्लेषणात्मक क्षमता में वृद्धि होती है। अल्पमन्दता के लिए यह दवा तथा मानसिक कार्य ज्यादा करने वालों के लिए यह मस्तिष्कीय टॉनिक जैसा असर दिखाती है। शंखपुष्पी के रासायनिक विश्लेषण से 'शंखपुष्पीय' नामक एक एल्केलॉयड का पता चला है। यह रसायन प्राणियों में स्वतः होने वाली माँसपेशियों की हलचलों (स्पॉन्टेनियस मोटर एक्टिविटिज) को घटा देता है। यह जीवों में विद्युत के झटकों द्वारा उत्पन्न आक्षेप (मिरगी जैसे कन्वल्शन) और कम्पनों को शान्त कर देता है।

अध्ययनों में शंखपुष्पी के रसायन थॉयराइड ग्रंथि को प्रभावित करने वाले तथा मस्तिष्कीय उत्तेजनाओं को शांत कर भावनात्मक बदलाव लाकर रक्तचाप को घटाने वाले सिद्ध हुए है। यह हृदय के बोझ को घटाता है तथा गहरी निद्रा लाने में भी मदद करता है।

छोटी चंदन का उपयोग उच्च रक्तचाप, मानसिक उत्तेजना को शांत करने, उन्माद (पागलपन) और अपस्मार के इलाज में कई शताब्दियों से किया जा रहा है। इसके रासायनिक विश्लेषण से अभी तक 20 से ज्यादा एल्केलॉयडों का पता चल चुका है। इसमें रेसर्पीन, रेसनामिन, रावोल्सिन,

एपेन्टिन इत्यादि कुछ प्रमुख एल्केलॉयड्स हैं। अध्ययनों से एक और विशेष बात का पता चला है कि छोटी चंदन में पाये जाने वाले एल्केलॉयड्स दो तरह के गुण वाले होते हैं। इनमें रेसर्पीन समूह के एल्केलॉयड समूह के एल्केलॉयड मुख्यत: मस्तिष्क के पश्च आज्ञाकंद और ब्रन स्टीम के रेटीकूलम केन्द्रको पर प्रभाव डालकर तथा उनकी कोशिकाओं में सिरोटोनिन का रिसाव बढ़ाकर रक्तचाप के स्तर को घटाते हैं। छोटी चंदन के यह यौगिक परिस्वतंत्र नाड़ी तंत्र को उत्तेजित करके पराधीय सूक्ष्म रक्त नलिकाओं, विशेषकर चमड़ी, फेफड़ों, मॉसपेशियों और मस्तिष्क की रकतवाहिनियों को फैलाकर उनके रक्त प्रतिरोध को घटा देते हैं। इससे बढ़ा हुआ रक्तचाप नीचे आ जाता है। छोटी चंदन के दूसरे समूह के अल्मेलीन समूह के एल्केलॉयड्स इनके बिलकुल विपरीत प्रतिक्रिया दर्शाते हैं। यह रक्तचाप को घटाने के बजाय बढ़ाते हैं। यह एल्केलॉयड् पहले समूह के हानि वाले प्रभाव को रोकते हैं।

शतावरी भी हृदय रोगियों एवं उच्च रक्तचाप पर बेहद कारगर सिद्ध होती है। इसका सेवन शहद के साथ किया जाता है। शतावरी की जड़ में सेपोनिन जैसे रसायन होते हैं, जो हृदय और फेफड़ों के लिए टॉनिक जैसे सिद्ध होते हैं तथा उनकी सामर्थ्य में वृद्धि करते हैं। इनसे हृदय की संकुचन क्षमता बढ़ती है तथा प्रत्येक धड़कन के साथ अधिक मात्रा में शुद्धिकृत रक्त शरीर के प्रत्येक अंग तक पहुँचता रहता है। शहद में भी कई तरह के खनिज तत्व काफी मात्रा में मौजूद रहते है। यह सब मिलकर हृदय, फेफड़ों की माँसपेशियों पर टॉनिक जैसा असर दिखाते हैं।

आधुनिक पैथी में उपचार

आधुनिक चिकित्या पैथी में उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करने के लिए कई तरह की दवायें प्रयोग में लायी जाती हैं। इनमें रक्तवाहिनियों को फैलाने वाली (वैसोडिलेटर्स), मूत्र की मात्रा बढ़ाने वाली दवायें (डाइयूरेटिक), वीटा ब्लोकर्स, कैलिशयम चैनल ब्लॉकर्स और एंजियोटेन्सिन के स्त्राव को रोकने वाली दवायें प्रमुख हैं। यह दवायें विभिन्न तरह से शरीर पर प्रभाव डालकर रक्तचाप को शीघ्रता से घटाती हैं, लेकिन आधुनिक दवाओं के साथ सबसे बड़ी बाधा यह आती है कि इन दवाओं को जीवन भर के लिए लेना पड़ता है, दूसरा यह दवायें पूर्णत: निर्दोष नहीं है। इन दवाओं के सेवन से कई तरह के पार्श्वप्रभाव रोगी पर होने लग जाते हैं। इनके अलावा इन दवाओं का सेवन कुछ दिनों के लिए भी छोड़ देने पर रक्तचाप पहले के मुकाबले और घातक स्तर तक बढ़ जाता है। इन सभी दशाओं का रोगी पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

अध्ययनों से पता चला है कि उच्च रक्तचाप की दवाइयों के सेवन में लापरवाही बरतने से रोगी की हालत दिनोदिन बिगड़ती जाती है, क्योंकि रोगी में रक्तचाप की वृद्धि करने वाले मूल कारक सदैव मौजूद रहकर सक्रिय बने रहते हैं। दवाओं के प्रभाव से यह कारक कुछ समय के लिए थोड़ा दब जाते हैं, किन्तु मौका मिलते ही (दवा का सेवन छोड़ते ही) और ज्यादा सक्रिय होकर रक्तचाप को घातक स्तर तक बढ़ा देते हैं। यही कारण है कि उच्च रक्तचाप की समस्या जितनी पुरानी होती जाती है, दवाओं के लेते रहने के बावजूद उसकी जटिलतायें बढ़ती जाती हैं और तब जरा सी लापरवाही रोगी के लिए प्राणघातक सिद्ध होती है। उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करने वाली दवाओं के निरन्तर सेवन से उनमें नपुंसकता, मुँह सूखना, पेट खराब रहना, कब्ज की शिकायत, घबराहट बनी रहना, हृदय की धड़कन अनियमित हो जाना, शरीर में पोटाशियम की कमी होते जाना, भावनात्मक बदलाव आना, मानसिक परेशानी रहना, हाथ-पैर ठण्डे पड़ना, हृदय की विफलता की शुरूआत और रक्तनलिकाओं में ऐंठन आने लग जाना जैसी जटिलतायें पैदा होने लग जाती हैं। इसलिए उच्च रक्तचाप से पीड़ित रोगियों को यह दवायें बहुत ही सावधानीपूर्वक और चिकित्सक के परामर्श से ही लेनी चाहिए।

-निरोगी दुनिया से साभार

बगीची पेड़ामल, O/s लोहगढ़ गेट, अमृतसर-143001, फोन 9417014059, 2529439

साधकों के लिए स्वर्णिम अवसर

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर गुड़गांव में दूषित वातावरण से दूर सुरम्य स्थान पर आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित शौचालय, रसोई स्नानगृह आदि से युक्त योग-साधकों की साधना के लिए बाहर एवं भूमिगत कमरे उपलब्ध हैं। आप सादर आमन्त्रित हैं।

कृपया सम्पर्क करें:- 9416054195, 9812640989, 9813754084

दिव्यगुणों से शरीर, मन व बुद्धि स्वस्थ होते हैं

- दर्शना देवी डॉ. अशोक आर्य

मानव की रक्षा उसके अन्दर के दिव्य गुणों से होती है। दिव्य गुण उस व्यक्ति को ही प्राप्त होते हैं जो व्यक्ति श्रम करता हो तथा संयम पूर्वक रहता हो। इन दिव्य गुणों से ही मानव का शरीर, उसका मन तथा उसकी बुद्धि को स्वास्थ्य लाभ मिलता है। इस बात को यह मन्त्र इस प्रकार व्यक्त करता है-

ओमासश्रचर्षणीध्रतो विश्वेदेवास आ गत।
दाश्वांसोदाशुषः ।। ऋग्वेद 1.3.7।।

गत मन्त्र में सात्विक भोजन से जीवन को सात्विक बनाने का उपदेश किया गया था। इस बात को ही आगे बढ़ाते हुए इस मन्त्र में दो बातों को समझाया गया है-

1. अपने को सात्विक भोजन के द्वारा सात्विक बना कर जीव परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हुए सर्वप्रथम यह कहता है कि हे दिव्यगुणों! तुम मुझे प्राप्त होवो, मुझे मिलो, मैं तुम्हारा अधिकारी बनूं। अर्थात् इस संसार में जितने भी दिव्य गुणों का भण्डार है, वह सब गुण मैं प्राप्त करके इन दिव्य गुणों का भण्डारी बनूं। यह दिव्य गुण केवल ओर केवल सात्विक व्यक्ति को ही, सात्विक जीव को ही मिलते हैं। मैंने सदा सात्विक भोजन किया है। मैंने सदा सात्विक अन्न ही ग्रहण किया है। इसलिए मेरे अन्दर दिव्य गुणों को पाने की योग्यता आ गई है, इसलिए मैंने इन्हें प्राप्त करने का, इन्हें प्रभु से मांगने का अधिकार भी प्राप्त कर लिया है। तब ही तो मैं प्रार्थना करते हुए कह रहा हूँ कि हे प्रभु। जितने प्रकार के भी दिव्य गुण हैं, वह सब मुझे प्राप्त करावो।

प्रश्न उठता है कि दिव्य गुण कहते किसे हैं? दिव्य का अभिप्राय: है किसी देवता के द्वारा दिए जाने वाले तथा गुण का अर्थ है अच्छाई। देवता से अभिप्राय है जो देने का कार्य करता है। हम परमात्मा को तो देवता कहते ही हैं क्योंकि वह परमात्मा हमें सदा ही कुछ न कुछ देता ही रहता है। इस प्रकार अन्य भी बहुत से तत्व हैं, जो हमें कुछ न कुछ देते ही रहते हैं तथा वायु व जल हमें जीवन देते हैं, वह भी देवता हैं। माता, पिता व गुरुजन हमें ज्ञान देते हैं, वह भी हमारे लिए देवता है। अन्य भी जहां से हमें कुछ मिलता है, उन साधनों को हम देवता ही कह सकते है।

ये दिव्य गुण हमारे जीवन में क्या करते हैं? इनसे हमें क्या लाभ होता है? इनका हमारे जीवन में क्या प्रयोजन है? यह भी हमें जानने का मार्ग यह मन्त्र बता रहा है। मन्त्र कह रहा है कि यह दिव्य गुण हमारा रक्षा करने का कार्य करते हैं अर्थात् यह दिव्य गुण हमारी रक्षा करते हैं। प्रश्न फिर उठता है कि यह गुण हमारी रक्षा कैसे करते हैं? हम जानते हैं कि दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिए हमें संघर्ष करना पड़ता है, मेहनत करनी होती है, तप करना होता है, यहां तक कि मुंह तक के स्वाद को छोड़कर सात्विक भोजन पर निर्भर होना पड़ता है, रूखा, सूखा खाना पड़ता है। इस सबसे एक बात तो स्पष्ट है कि जिन गुणों को पाने के लिए हम इतना संघर्ष करते हैं, यदि उन गुणों का हमारे जीवन में कुछ उपयोग ही न हो तो उन्हें पाने के लिए हम इतना संघर्ष क्यों करें? इतना समय क्यों लगायें? इतनी शक्ति व्यर्थ में क्यों नष्ट करें?

यह सब जानने के लिए हमें दिव्य गुणों की उपयोगिता को जनना होगा। दिव्य गुणों की ही सबसे उत्तम व सबसे प्रमुख उपयोगिता यह है कि यह गुण हमारी रक्षा करने वाले होते हैं तथा हमारी रक्षा का कार्य करते हैं। इन दिव्य गुणों से ही हमारा शरीर रोगों से बचा रहता है। शरीर में किसी प्रकार का भी रोग प्रवेश नहीं कर पाता। हम सदा निरोग रहते हैं, स्वस्थ रहते हैं। यह दिव्य गुण ही हैं जिन के कारण हमारे मन की सब मलिनताएं धुल कर नष्ट हो जाती हैं। मन के सब कलुष दूर हो जाते हैं। मन में किसी भी प्रकार की मैल नहीं रहती। इन दिव्य गुणों का तीसरा तथा सबसे प्रमुख कार्य है कि जिसके पास यह दिव्य गुण होते हैं, उसकी बुद्धि में किसी प्रकार की मन्दता नहीं आती, किसी प्रकार की मलिनता नहीं आती। मन्द बुद्धि व्यक्ति समाज के साथ नहीं चल पाता। मन्द बुद्धि व्यक्ति समाज से बहुत पीछे रह जाता है, उसकी अपनी इच्छाएं क्या हैं? इसका भी उसे ठीक से ज्ञान नहीं होता। इस कारण कोई भी व्यक्ति मन्द बुद्धि नहीं होना चाहता। स्कूल की कक्षा में ही जो बालक मन्द बुद्धि होता है, उसका सब बालक उपहास उड़ाते हैं, उसकी खिल्ली उड़ाते हैं। कोई

नहीं चाहता कि उसकी कभी खिल्ली उड़े। इससे बचने का एक मात्र साधन है दिव्य गुणों की प्राप्ति। जिसके पास दिव्य गुणों का भण्डार होता है, उसकी बुद्धि बड़ी तेजी से चलती है। वह बड़ी से बड़ी समस्या को मिनटों में हल करने की कशमता रखता है। वह कभी विकट स्थिति में भी अपने धैर्य को नहीं छोड़ता। इस प्रकार दिव्य गुणों के स्वामी की बुद्धि तिव्रतम हो जाती है।

यह दिव्य गुण मनुष्य को धारण करते हैं, आगे ले जाते हैं, उनकी उन्नति का कारण बनते हैं। जो व्यक्ति कृषि करते है, जो व्यक्ति मेहनत व मजदूरी करते है, श्रम करते है, ऐसा करने वालों की यह दिव्य गुण रक्षा करने का कार्य करते हैं। दिव्य गुण का भाव ही वास्तव में श्रम से होता है। जो व्यक्ति सदा श्रम करता है, मेहनत करता है, परिश्रम करता है, वह ही इन दिव्य गुणों को पाता है, जो आलसी बनकर पड़ा रहता है, वह इन गुणों को कैसे पा सकता है? अर्थात् नहीं पा सकता। यह कहा भी जाता है कि आलसी व्यक्ति दुर्गुणों का स्वामी होता है तो पुरुषार्थी व्यक्ति सदगुणों की खान होता है। आलसी को कहीं भी कोई सम्मान नहीं मिलता जबकि सद्गुणों से युक्त व्यक्ति का, दिव्यगुणों से युक्त व्यक्ति का सर्वत्र सम्मान होता है दूर दूर तक उसका यश व कीर्ति फैले होते है, सब स्थानों पर उसके गुणों की चर्चा होती है तथा सब लोग उसका सान्निध्य पाने के अभिलाषी होते हैं।

2. इस मन्त्र में दूसरा उपदेश देते हुए बताया गया है कि हे विश्व देवो! हे प्रभु! आप हमें सब कुछ देने वाले हो। आपकी ही कृपा से हमें सब कुछ मिलता है। यदि आप का वर्द-हस्त हमारे ऊपर न हो तो हमें कुछ भी नहीं मिल सकता। भाव यह है कि जब एक व्यक्ति दानशील होता है, दाता होता है, देवता का कार्य करता है तो वह व्यसनों में रम ही नहीं सकता। भाव यह है कि दाता, दान देने वाला, अपने अतिरिक्त धन को, अपनी अतिरिक्त वस्तुओं को दान कर के दूसरे लोग, जो साधन हीन होते हैं, उनका सहयोग कर उनकी आवश्यकताए पूरा करने का यन्त्र करता है। जब वह अपने अतिरिक्त धन को दूसरों की सहायता में लगा देता है तो उसके पास इतना धन शेष रहता ही नहीं कि वह अपने जीवन का व्यस्नों में धकेल सके। उसके पास इतना समय भी नहीं होता कि वह व्यसनों में उलझ कर अपने समय को नष्ट करे। यदि वह इन बुराईयों में लगता है तो वह दान नहीं कर सकता ओर यदि इन व्यसनों से बचता है तो दाता बन जाता है। दाता के रूप में उसका यश, कीर्ति दूर-दूर तक चली जाती है। लोग उसकी शरण में आने लगते हैं।

अत: मन्त्र कह रहा है कि हे प्रभु! आप सब कुछ देने वाले हो। आप देने वाले स्वभाव के दाता स्वभाव के हो। जब एक व्यक्ति दाता बन कर अपने अन्दर के दोषों को धो देता है तो वह दानवृत्ति वाला होने से लोभी नहीं रह सकता क्योंकि लोभी तो कभी दाता बन ही नहीं सकता, कोई दान का कार्य कर ही नहीं सकता। अत: दाता कभी लोभी नहीं होता। लोभ का उसकी प्रवृत्तियों मे नाश होने से वह सब प्रकार के व्यस्नों से ऊपर उठ जाता है, उसमें किसी प्रकार के व्यसन के लिए कोई स्थान ही नहीं रहता। व्यसनों से ऊपर उठने के कारण दाता बनने के कारण, वह अपने शरीर में शक्ति एकत्र करने में, सोम रक्षा करने में सक्षम हो जाता है तथा भरपूर मात्रा में सोम की रक्षा कर लेता है। यह ही उसके जीवन का यग्य होता है। जो इस प्रकार का यग्य करता है, उसके यग्य में सब प्रकार के दाता, सब प्रकार के दानी, सब प्रकार के देव भाग लेते हैं, उपस्थित होते हैं। इस सब का भाव यह है कि जब मनुष्य अपने शरीर में सोम की रक्षा कर लेता है तो उस के जीवन में दिव्य गुणों का विकास होता है तथा वह धीरे-धीरे इन दिव्य गुणों का स्वामी बन जाता है।

- 104, शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी 201010, गाजियाबाद

आनन्दपूर्ण जीवन हेतु

दु:ख, अशान्ति, तनाव, वैमनस्य आदि भावों को रूपान्तरित कर सुख शांति, प्रेम करूणा एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण, मानसिक दुर्भावनाओं से निर्जरा स्वयं के व्यक्तित्व का सम्यक् विकास और जीवन को आह्लादपूर्ण बनाने वाली मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया द्वारा लाभान्वित होने के लिए आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ जिला झज्जर, हरियाणा में आप सादर आमन्त्रित हैं।

—राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

हंसो-हंसाओ

– रवि शास्त्री

1. पप्पु पर मुकदमा था कि उसने गांव के सबसे सीधे सादे आदमी को लूट लिया। मजिस्ट्रेट ने कहा कि पप्पु थोड़ी तो शर्म खाते। तुम्हें गांव में कोई ओर लूटने को न ही मिला। यह सीधा सादा आदमी। यह जो गांव का सबसे सीधा सादा आदमी है, यह एक नमूना है सतयुग का, इसको तुमने लूटा?
पप्पु ने कहा-मालिक आप भी क्या बात करते है इसको न लुटू तो किसकी लूंटू। मुझसे बस यही लुट सकता है गांव में, बाकी तो सब खिलाड़ी हैं, पहुंचे हुए हैं। मेरी भी मजबूरी समझो किसको लुटूं और तो मुझे ही लूट लेंगे। यह एक ही बचा मेरे लिए तो यह तो मेरा सौभाग्य है कि एक सतयुगी भी है नहीं तो मेरा किसी पर उपाय ही नहीं चलेगा।
2. बनिया और जाट काम से दूसरे गांव जा रहे थे। जाट को बनिये के 2000 रूपये चुकाने थे, पर वह टालमटोल करता था। सुनसान रास्ता आया तो सामने से कुछ लुटेरे आते दिखाई पड़े। लुटेरों ने दूर से ही कड़क कर उन्हें ललकारा। जाट ने जल्दी से अपनी धोती की फेंट मे से नोटो की गड्डी निकालकर बनिये को थमाते हुए कहा-लाला जी ये 1800 रूपये संभाल लो। अब 200 ही रह गयें हैं।
3. पप्पु रात को साइकिल लेकर कब्रिस्तान में घुस गया, फिर दुसरी साईड से बाहर निकला और पसीना पौंछते हुए बोला ''प्यारे ये कौन सा रोड था..... इतने सारे स्पीड ब्रेकर।
4. सरदार गन लेकर दरवाजे पर खड़ा हुआ था
पत्नी-व्हाई आर यू स्टैडिंग हेयर?
सरदार-शेर का शिकार करने जा रहा हूँ
पत्नी-तो जाओ
सरदार-कैसे जाऊं बाहर कुत्ता खड़ा है।
5. पप्पु-यार जब मैं मर जाऊँ तो सामने वाली फैमिली को जरूर बुलाना
चप्पु- क्यों
पप्पु- यार उनके घर की लैडिज मुर्दे से लिपट-लिपट कर रोती हैं।

कर्तव्यों के प्रति सदैव जागरूक रहें

या निशा सर्व भूतानां तस्या जागर्ति संयमी,
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः।

नाशवान सांसारिक सुख से उदासीन जो रहता।
जो विषमय विषयों-भोगों के प्रति सोया ही रहता।।
वही व्यक्ति ही संयम के प्रति जागरूक रह सकता।
कामो द्वीपी कोलाहल जिसको छू तक नहीं सकता।।
उसकी जीवनचर्या अन्यों से हटकर होती है।
वह जगता है, जिसे निशि में बाकी दुनिया सोती है।।
जिस सुख-भोग विलास प्राप्ति हित सजग अन्य जन रहते।
उसमें मननशील-मुनि निशिवत लखते, सोते रहते।।
उसका जीवन क्रम अन्यों से पूर्ण अलग होता है।
वह दुनियावी लोगों से ऊपर उठकर जीता है।।
स्थित प्रज्ञ, लोकसेवी-परमात्म तत्व के ज्ञाता।
अरू विमूढ़-भोगी के जीवन में नहि मिलती समता।।
स्थित प्रज्ञों का जीवन व्यौहार स्वाभाविक होता।
सरस, सरल, सतगुणी, खुलासा जीवन का क्रम रहता।।
जबकि अन्य जन ढोंग, स्वार्थ अरू दम्भ युक्त जीते हैं।
उनके शिष्टाचार दिखावा-वनावटी होते हैं।।
येहि धूर्तजन फल के प्रति ही जागरूक हैं रहते।
अपने कर्त्तव्यों कर्मो के प्रति तो सोए ही रहते हैं।
किन्तु स्थित प्रज्ञ सिर्फ फल के प्रति ही सोता है।
कर्त्तव्यों के प्रति सदैव वह जागरूक रहता है।।
भोगों के प्रति उदासीन जन ही संयम अपनाते।
यही बात श्रीकृष्ण यहाँ रूपक द्वारा समझाते।।
अस्तु, संयमित रहके कर्त्तव्यों को सजग निभाओ।
अरू जीवन में तुष्टि, पुष्टि, सानंद शान्ति शुचिपाओ।।
अगर स्वार्थ तज प्रजा, प्रशासक, नृप स्वधर्म निभाऐं।
तो, ये वसुंधरा स्वर्गादपि गरीयसी बन जाऐ।

–**दयाशंकर गोयल**,1554, डी. सुदामा नगर, इन्दौर

सम्पर्क करें

पारिवारिक अनुचित व्यवहारों से उत्पन्न मानसिक उद्विग्नता, वैमनस्य, ईर्ष्याद्विष आदि में मनोवैज्ञानिक समाधान, वेद, दर्शन, उपनिषद गीता आदि साहित्य पर सुबोध व युक्ति पूर्ण प्रवचन वैदिक-यज्ञ तथा प्रभावोत्पादक ध्यान-योग साधना शिविरों हेतु सम्पर्क करें :

राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

मोतियों की लड़ी -कन्हैया लाल आर्य

कन्हैया लाल आर्य

1. प्रशंसा वह हथियार है जिससे शत्रु भी मित्र बनाया जा सकता है।
2. आदर प्राप्त करने का एक मात्र उपाय है कि पहिले आप दूसरों का आदर करें।
3. महानता दिखाई नहीं जाती, वह स्वयं दिखने लगती है। अत: अपने गुणों की चर्चा मत करो, दूसरे आप के गुणों की चर्चा करें यही महानता है।
4. नये विचारों को सदैव सन्देह की दृष्टि से देखा जाता है और आमतौर पर उसका विरोध किया जाता है परन्तु नये विचार रखने के लिए धैर्य धारण करें, उद्विग्न न हो, सफलता अवश्य मिलेगी।
5. एक मुस्कराहट मन की गांठे आसानी से खोल देती है, मेरे मन की ही नहीं, तुम्हारे मन की भी।
6. जो भारी कोलाहल में संगीत को सुन सकता है अर्थात् कर्म में व्यस्त रहता है वही महान उपलब्धि को प्राप्त करता है।
7. जो आपत्ति के समय में भी शान्त चित्त से विचार कर सकते हैं, वे ही सच्चे धैर्यवान होते हैं।
8. पुरुषार्थ सहित की गई प्रार्थना से शरीर को वास्तविक सुख, मन को शान्ति और आत्मा को आनन्द की प्राप्ति होगी।
9. स्वयं का शत्रु वह है जो दूसरों की निन्दा करने में थकता नहीं और अपनी आलोचना करने वालों को अपना घोर शत्रु माने।
10 दूसरे क्या करते व कर रहे हैं इस बात पर ध्यान न देकर हम स्वयं क्या कर रहे हैं, इस बात पर ध्यान देना चाहिए, यही जीवन निर्माण की क्रिया है।

4/45, शिवाजी नगर, गुड़गांव, हरियाणा, चलभाष-09911197073

श्राद्ध बनाम पितृ यज्ञ- श्राद्ध प्रतिदिन करना चाहिए

एक दिन की बात है आश्विन मास का पितृ पक्ष चल रहा था। इन दिनों पौराणिक भाई अपने मृतक पूर्वजों की याद में पंडितों को भोजन कराते हैं। प्रात: काल पार्क में कुछ वरिष्ठ लोग श्राद्ध के सम्बन्ध में चर्चा कर रहे थे। मैं भी वहां बैठा हुआ था। एक व्यक्ति ने कहा-आर्य समाज तो श्राद्ध के विरूद्ध है। आर्य समाजी श्राद्ध को नहीं मानते। बेशक आर्य जी से पूछ लो। मैंने कहा, हम (आर्य समाजी) श्राद्ध करने के विरूद्ध नहीं है। आप तो वर्ष में एक दिन अपने पितरों को याद करते हो। हम कहते हैं कि श्राद्ध प्रतिदिन करना चाहिए। वास्तव में जिसे आप श्राद्ध कहते हो वह पितृ यज्ञ है अर्थात् जीवित माता-पिता एवं गुरुजनों की नित्य प्रति सेवा करना है। श्राद्ध का अर्थ है-श्रद्धा से किया गया सेवा कार्य। श्रद्धा शब्द श्रत्+धा से मिलकर बना है। श्रद्धा का अर्थ है जो (श्रत्) सत्य को (धा) धारण किए हुए है। अब सच्चाई यह है कि जो वृद्ध जन जीवित आपके सामने हैं उनकी सेवा करके श्राद्ध कर सकते हो। मृतक पूर्वजों का हमें किसी को कुछ नहीं पता कि कहां पर किस पशु पक्षी आदि के शरीर में हैं।

हम देखते हैं कि आज सन्तान जीवित माता-पिता को पानी भी नहीं पिलाती उनके मरने के बाद श्राद्ध का पाखण्ड करके प्रदर्शन करते हैं प्रिय सज्जनों! श्राद्ध करना चाहते हो तो प्रतिदिन जीवित माता-पिता एवं गुरुजनों की सेवा किया करो। उनको समय पर अच्छा भोजन दो। नये साफ-सुथरे वस्त्र दो। उनकी सेवा करके उन्हें तृप्त+प्रसन्न रखो। ये ही सच्चा श्राद्ध है। मनु महाराज कहते हैं जो वृद्ध जनों की नित्य सेवा करते हैं उनकी विद्या, बुद्धि, यश और बल चार चीजें बढ़ती हैं।

- देवराज आर्य मित्र हरि नगर

लड़की का अधिकार

छोटा सा यह जीवन है, ये जीवन देती है बेटियां
फिर भी ऐसा क्यों, गर्भ में मारी जाती है बेटियां
बेटा-बेटा जग कहे, बेटी कहे ना कोय
बेटी देखन मैं चली, तो बेटी मिली न कोय
समझो इस बात को, कम नहीं होती, बेटों से बेटियां,
बेटे होते हैं कंपाऊन्डर अगर, तो डाक्टर होती है बेटियां
सारी जिन्दगी दु:ख सहती है बेटियां
फिर भी भागी हैं वे, जिन्हें बुरी लगती है बेटियां
दु:ख में सुख में, सभी का साथ देती है बेटियां

- **श्रीमती सुदेश सन्दूजा**, धर्मपुरा, बहादुरगढ़

भयानक रात

–डॉ. दर्शन लाल आजाद, 22 पटेल नगर, पानीपत

दिल को हिलाने वाली मैं दास्तां सुनाता हूं,
एक भयानक रात की आपको याद दिलाता हूं
उस रात के जिकर से दिल घबरा जाता है
उस रात की घटना से इन्सान शरमा जाता है
उस रात एक विधवा का पुत्र प्यारा मर गया
तड़पता छोड़ माँ को माँ का सहारा मर गया
ढाहें मारकर रोती वो किस्मत को कोसती थी,
छाती पीटती पागलों की तरह बाल नोचती थी,
लाश के लिए कफन तक न था इतनी गरीब थी,
भरी दुनिया मं बेसहारा वो बदनसीब थी।
आंखो से आखिर आंसुओं का चश्मा रूक गया,
रो रो कर दिल खुदा की सजा में झुक गया
अपने आंचल को फाड़ा उसने लाश को लपेटा,
नदी की तरफ चल पड़ी उठा के अपना बेटा।
कभी खत्म न होने वाले गम ने उसे घेरा था,
काली रात की तरह उसकी दुनियां में अंधेरा था,
पहुंची नदी पे आखिर गुजरी जब रात आधी,
बैठे थे वहां ऋषि रेत पे लगाये समाधि।
पांव की चाप सुन योगी की समाधि खुल गई,
रूदन और विलाप से ऋषि की आत्मा हिल गई,
देखते रहे वो मां ने लाश से कपड़ा उतारा,
रोते-रोते चूम कर दिया बहा बेटा प्यारा।
उदास गमजदा वो उस कपड़े को धोती है,
अपनी मजबूरी बेबसी पर जार-जार रोती है।
यह दृश्य देखकर ऋषिवर हैरान हो गये,
प्रेम की वो मूर्ति एकदम परेशान हो गये।
कहा स्वामी ने कफन का कपड़ा क्यों उतारा है,
क्या यह कपड़ा तुझे इस बेटे से भी प्यारा है।
रो कर बोली बहाया है बेटे की नंगी लाश को,
ओढ़ कर यह कफन बचाऊंगी अपनी लाज को,
मुझ अभागन का दुनियां में कोई सहारा नहीं,
गम के तुफां में घिरी हूं कोई किनारा नहीं।
तन ढकने को सिर्फ यही कपड़ा है मेरे पास,
इतना कह चल पड़ी रोती हुई वो जिंदा लाश।
अबला के यह शब्द तीर की तरह जख्म करने लगे,
पैर उसके धरती पे नहीं ऋषि की छाती से पड़ने लगे
चली गई वो पर इस घटना ने ऋषि को झझौंड़ दिया
शिवरात की तरह इस रात ने ऋषि को मोड़ दिया।
सोचने लगे ऋषि क्या दुर्दशा है समाज की,
जिन्दगी भी कोई जिंदगी है निर्धन मोहताज की।
सारा समाज पीड़ित है मुझे ही कुछ करना होगा,
दूषितः दुःखी संसार का दुःख हरना होगा।
मोक्ष नहीं मेरा लक्ष्य है संसार का उपकार करना,
अछूत व विधवा का है मुझे अब उद्धार करना।
इस संकल्प की खातिर ऋषि ने जीवन लगा दिया,
कहा जो जुबां से स्वामी ने वो करके दिखा दिया।
दुःखियो की खातिर आर्य समाज का निर्माण किया,
संसार का उपकार कर संसार का कल्याण किया।
दीन दुःखी बे सहारों की आर्यो से यह अरज है
शिवरात की तरह इस रात को भी मनाना फर्ज है
इस रात की महिमा भी शिवरात से कम नहीं,
न जाने फिर इस रात को क्यों मनाते हम नहीं।
हर समाज में परोपकारी सभा हो इस रात का पैगाम है।
'आजाद' दुःखियों के दुःख हरना आर्यो का काम है।

लाजवाब है दयानन्द

क्रांति के विचारों की आग है दयानन्द
ज्ञान के प्रकाश का चिराग है दयानन्द
परोपकारी सदाचारी बेदाग है दयानन्द
स्पष्ट व सत्य वक्ता बेलाग है दयानन्द
प्रेम दया व आनन्द का राग है दयानन्द
तप, साधना, यज्ञ, योग बैराग है दयानन्द
विद्वान सहनशील अनूठा त्याग है, दयानन्द
दिमाग बदल डाले ऐसा दिमाग है दयानन्द
त्रेदवाद का तीर्थ पवित्र प्रयाग है दयानन्द
मानव समाज के मिटाता सब दाग है दयानन्द
कुचलता जात-पात का नाग है दयानन्द
नारी को दिलाता बराबर भाग है दयानन्द
पढ़ के देख लो खुली किताब है दयानन्द
कोई भी नकाब नहीं बेनकाब है दयानन्द
जवाब नहीं जिसका वो लाजवाब है दयानन्द
आजाद् सुनहरे भविष्य का ख्वाब है दयानन्द

गायत्री महिमा गीत

–म. ओम मुनि

आओ सब मिलकर श्रद्धा से गायत्री गाते हैं।
इस महामन्त्र की शक्ति को सब सीस झुकाते हैं।।
जय-जय गायत्री मां।। जय-जय गायत्री मां।।

यह प्रथम गान परमेश्वर का सब वेदों की ज्योति।
सब देवों की माता है और यह दिव्य ज्ञान मोती।।
शेष-महेश-दिनेश सभी हैं इसके गुण गाते।
ऋषि विश्वामित्र भी इसके तप से ऋषि पदवी पाते।।
इस महामन्त्र की शक्ति को सब सीस झुकाते हैं।
जय-जय गायत्री मां।। जय-जय गायत्री मां।। 1

मर्यादा पालक श्रीराम थे नित गायत्री गाते।
योगीराज श्रीकृष्ण भी इससे पावन सिद्धि पाते।।
गायत्री जप से सति अनुसुईया जगमाता पद पाती।
इसी के तप से देवी सीता लव-कुश से पुत्र पाती।।
सब की माता-सावित्री को हम सीस झुकाते हैं।।
इस महामन्त्र की शक्ति को सब सीस झुकाते हैं।
जय-जय गायत्री मां।। जय-जय गायत्री मां।।...2

बचपन में ऋषि पाणनि ने थी जड़ बुद्धि पाई।
फिर गिरि शिखर चढ़ कर थी गायत्री अपनाई।।
पावन गायत्री जप से मिली उनको मेधा बुद्धि।
फिर अष्ठाध्यायी रचकर कीर्ति ऋषियों में लिख दी।
वेद ज्ञान की कुंजी इसे सब विद्वान बताते हैं।
इस महामन्त्र की शक्ति को सब सीस झुकाते हैं।।
जय-जय गायत्री मां।। जय-जय गायत्री मां।।...3

गुरु विरजानन्द ने गंगा में गायत्री अनुष्ठान किया।
ऋषि देव दयानन्दने मां की महिमा का गान किया।।
सब देवों और ऋषियों ने थे गायत्री गीत गाये।
सब की माता और दाता ये सब हैं इसके जाये।।
वाणी और बुद्धि हो पावन गायत्री जो गाते हैं।
इस महामन्त्र की शक्ति को सब सीस झुकाते हैं।
जय-जय गायत्री मां।। जय-जय गायत्री मां।।...4

सब की रक्षक, पालक सबकी और सुखकी दाता ये।
है सविता देव प्रेरक सबकी, विज्ञान विधाता ये।।
है दिव्य गुणों की दाता ये बुद्धि भण्डार भरे।
जो श्रद्धा से गाए उसके सब पूर्ण काज करे।
अब 'ओम मुनि' भी करबद्ध हो गायत्री गाते हैं।
इस महामन्त्र की शक्ति को सब सीस झुकाते हैं।।
जय-जय गायत्री मां। जय-जय गायत्री मां।।...5

– वैदिक भक्ति साधना आश्रम रोहतक

श्री रामचन्द्र आर्य को धर्मपत्नी शोक

पूज्या ममतामयी-करूणामयी-स्नेहमयी वन्दनीय माता श्रीमती रामप्यारी जी का निधन 12 अप्रैल 2013 को हुआ। वह 82 वर्ष की थी। अपने पीछे 5 सुपुत्रियां-एक सुयोग्य सुपुत्र तथा भरा पूरा परिवार छोड़ कर गई है। श्री रामचन्द्र आर्य के साथ उन्होंने 66 वर्ष मित्र सहधर्मिणी व कुशल

गृहिणी के रूप में रही। वह धार्मिक ईश्वर भक्त कर्त्तव्य परायण तथा सेवा की प्रतिमूर्ति थी। श्रीमती रामप्यारी जी को आर्य जगत के उच्च कोटि के विद्वान संन्यासियों का आशीर्वाद प्राप्त था। प. धुरेन्द्र शास्त्री प. प्रकाशवीर शास्त्री, महात्मा आनन्द भिक्षु आदि विद्वान गुड़गांव पध ारते रहे हैं। स्वर्गीय माता जी की प्रेरणा सभा में उपस्थित जन समूह उनकी प्रशंसा करते हुए नहीं थक रहा था। उनकी सभा में डॉ. शिव कुमार शास्त्री-पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़, आचार्य अरविन्द्र शास्त्री तथा अनेक गणमान्य जनों ने श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री राम चन्द आर्य ने आपार जन समूह का इस दुःख की घड़ी में परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करने पर धन्यवाद किया। अन्त में मा. सोमनाथ आर्य ने भिन्न-भिन्न संस्थाओं से आये शोक प्रस्ताव एवं विद्वानों द्वारा प्रेषित सहानुभूति एवं सान्त्वना संदेशो से अवगत कराया। स्व. माता जी मरणोपरान्त नेत्र दान करके अपने निस्वार्थ एवं परोपकार जीवन का परिचय दिया। परिवार की ओर से धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं को दान भी दिया गया।

-अशोक आर्य, प्रधान आर्य समाज भीम नगर

प्रार्थना कैसी

एक बार ईसा अपने शिष्यों से जुदा हो गए और प्रार्थना करने लगे। जब उन्होंने प्रार्थना कर ली तो शिष्य उनके पास गये और बोले, 'स्वामी', हमें प्रार्थना करने की सीख दीजिए।'

ईसा ने उनसे कहा-'' सबसे पहली बात तो यह है, आप लोगों को वैसे प्रार्थना नहीं करनी चाहिए जैसे कि अक्सर की जाती है, यानि कि लोग आपको प्रार्थना करते हुए देखें और उसके लिए आपकी तारीफ करें। अगर यह इस ढंग से की जाती है तो यह मनुष्यों के लिए की जाती है और इसके बदले मनुष्य की इनाम देते हैं। आत्मा को इस तरह की प्रार्थना से कोई लाभ नहीं होता है। लेकिन अगर आप प्रार्थना करना चाहते है तो ऐसे स्थान पर जाइये जहां आपको कोई नहीं देखे और वहां अपने प्रभु के चरणों में प्रार्थना कीजिए। प्रभु आपको आपकी आत्मा की जो आवश्यकता होगी, प्रदान करेंगे।

जब आप प्रार्थना करें तो बहुत-सी बातें न कहिए। परमात्मा को आपकी आवश्यकताओं का ज्ञान है, यहाँ तक कि अगर आप कुछ भी न मांगे, तो भी वह आपकी आत्मा की सब आवश्यकताओं को पूरी करेंगे। सबसे पहले आपको यह प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारे अन्दर परमात्मा की जो शक्ति है, वह पवित्र हो, अर्थात् हमारी आत्मा में ''स्वर्ग के राज्य'' का उदय हो, हम अपनी इच्छा के अनुसार नहीं वरन परमात्मा की इच्छानुसार जीवन बितायें। हम अधिक के लिए इच्छा न करें बल्कि केवल अपने प्रतिदिन के भोजन की इच्छा रखें। परमात्मा इस बात में हमारी सहायता करें कि हम अपने भाईयों के गुनाहों को माफ करें और प्रलोभनों तथा बुराईयों से बचने में वे हमारी सहायता करें।

आप लोगों की प्रार्थना यह होनी चाहिए-हे प्रभु तेरा वास स्वर्ग में है। तेरा नाम पावन हो। तेरे राज्य का उदय हो। स्वर्ग के समान आज भी हमें रोटी दे। हमें हमारे गुनाहों के लिए माफ कर, जैसे कि हम अपने प्रति गुनाह करनेवालों को माफ करते हैं। हमें प्रलोभन तथा बुराई से बचनाना।

यह है प्रार्थना करने का ढंग, लेकिन अगर आप प्रार्थना करना चाहते हैं तो पहले यह विचार करो कि आपके दिल में किसी के प्रति क्रोध तो नहीं है। यदि आपको स्मरण हो कि क्रोध है तो पहले जाकर उसके साथ सुलह करो, अथवा अगर उस आदमी को पा न सकें तो आपके दिल में उसके प्रति जो क्रोध है, उसे निकाल दें और उसके बाद प्रार्थना शुरु करें। तभी आपकी प्रार्थना आपके लिए उपयोगी होगी।

ईसा ने अनेक नगरों और ग्रामों में उपदेश किये, और उसने अपने शिष्यों को उन जगहों में भेजा, जहाँ उनकी जाने की इच्छा थी। उन्होंने उनसे कहा- ''बहुत से लोग वास्तविक जीवन के वरदान को नहीं जानते मुझे उन सबपर दया आती है और मेरी इच्छा है कि जो मैं जानता हूँ उन्हें बतलाऊँ। जिस प्रकार एक किसान अपने खेत का अकेला ही प्रबंध नहीं कर सकता, बल्कि फसल-कटाई के लिए मजदूरों को बुलाता है, इसी प्रकार मैं भी बुलाता हूँ। भिन्न नगरों में जाओ और प्रभु-राज्य के बारे में जो उपदेश हैं उनकी सब जगह चर्चा करो। लोगों को प्रभु-राज्य के आदेश बतलाओ और हर बात में उन आदेशों का खुद भी पालन करो।''

मैं तुम्हें भेड़ियों के बीच एक भेड़ के समान भेज रहा हूँ। सांपों के समान अकलमंद और फाख्ता की तरह पवित्र बनो। सबसे पहले अपना निजी सामान कुछ भी न रखे, अपने साथ कुछ भी न जो-न थैला, न रोटी, न धन। केवल तन पर कपड़े और पांव में जूते हों। लोगों के बीच भेदभाव मत करो। अपने ठहरने के लिए किसी मकान को चुनो नहीं, बल्कि वो मकान पहले पड़े उसी में ठहर जाओ। जब आप उसमें दाखिल हों, तो उसमें रहने वालों को नमस्कार करो। यदि वे आपका स्वागत करें तो भीतर जाओ, नहीं तो अगला मकान देखो।

लोग आपकी बातों को सुनकर आपसे नफरत करेंगे और हमला करेंगे वे एक से दूसरी जगह आपको खदेड़ेगे, लेकिन निराश होने जैसी कोई बात नहीं। जब आपको एक गांव से खदेड़ दिय जाये तो दूसरे गांव में

जाओ वहां निकाल दें तो तीसरे में जाओ। जिस प्रकार भेड़िए भेड़ का पीछा करते हैं, वैसे आपका पीछा किया जायेगा। आपको पीटा जायेगा और आपको शासकों के सामने पेश किया जायेगा ताकि आप अपने आपको न्यायपूर्ण सिद्ध कर सकें। जब आप न्यायाधीशें के सामने पेश किये जायें तो जो कुछ आप कहने जा रहे हों। उसके बारे में सोचो नहीं, बल्कि आपको मालूम होना चाहिए कि आपके भीतर परमात्मा की शक्ति वास करती है और जो आवश्यक होगा वही वह करेगा।

लोग आपके तन को मार सकते हैं, लेकिन आपकी आत्मा का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। इसलिए मनुष्यों से डरो नहीं। अगर आप परमात्मा की इच्छा को पूरा नहीं करते तो अपने तन के साथ अपनी आत्मा की हत्या करने से ही डरो। इसी से आपको डरना चाहिए। परमात्मा की इच्छा के बिना चींटी भी नहीं मरती। उसकी इच्छा के बिना आपके सिर का एक बाल भी बांका नहीं हो सकता और अगर आप उसकी रखवाली में हैं, तो आपको डर किसका है?

– प्रस्तुति कर्ण आर्य

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि.
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. चौ. मित्रसेन जी सिन्धु आर्य, उद्योगपति, रोहतक
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्री जे.आर. वरमानी, गुड़गाँव, हरियाणा
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओम्प्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री वेदपाल जी आर्य, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
42. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
43. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
44. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
45. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
46. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
47. श्री स्वदीप दास जी गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
48. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
49. चौ. हरनाथ सिंह जी राघव, खेड़ला, गुड़गांव
50. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
51. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
52. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
53. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
54. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
55. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
56. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
57. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
58. यज्ञ समिति झज्जर
59. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
60. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
61. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
62. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
63. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
64. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
65. श्री अनिल जी मलिक, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
66. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़

गीता के कर्मयोग से कर्म-बोध

-शिवकरण दूबे वेदराही

मानव इस सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। उसमें सांसारिक-प्रगति एवं आत्मोन्नति की अपार संभावनाएँ हैं। वह सृष्टि के अन्य पश्वादि प्राणियों से इस रूप में भिन्न है कि जहाँ अन्य प्राणियों में स्वाभाविक कर्म सामर्थ्य (आहार, निद्रा, भय मैथुनादि) है वहीं मनुष्य ज्ञान-विज्ञान, कर्म, उपासना, विद्या, तप तथा धर्म के द्वारा अपना शारीरिक, मानसिक, आत्मिक उत्थान करके मुक्ति का अधिकारी हो सकता है। इसी मन्तव्य को महाभारत में महर्षि वेदव्यास ''गुह्यं ब्रह्म तद् इदमब्रवीमि नहि मनुष्यात् श्रेष्ठतरं हि कश्चित्'' का उद्‌घोष करते हुए कहते हैं कि मैं तुम्हे एक रहस्यमय बात बताता हूँ कि मनुष्य से सर्वश्रेष्ठ कुछ भी नहीं है।। मनुष्य को श्रेष्ठ बनाने के लिए ही उसके लिए वेदशास्त्र, गीता, रामायण, विधि-विधान एवं गुरुओं की जरूरत है जिसके माध्यम से उसे कर्म का ज्ञान कराया जाता है अन्यथा सृष्टि का यह श्रेष्ठ संभावना वाला मनुष्य पशुओं से बदतर स्थिति में पहुंच जाता है या मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति को चरितार्थ करता है। मनुष्य में ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सार्थकता है अत: मोक्षाधिकारी मनुष्य को नैमित्तिक ज्ञान द्वारा कर्म-बोध कराया जाता है। कर्म के ज्ञान के बिना मनुष्य अनेक निषिद्ध कर्मो को करता है और शारीरिक, मानसिक, आत्मिक हानि करते हुए दु:ख का भागी होता है। मनुष्य को बालपन से ही माता-पिता एवं गुरु के माध्यम से शिक्षा, संस्कार एवं विद्या का ज्ञान कराया जाता है जिससे वह अपने जीवन का समुचित रूप से विकास एवं उत्थान करते हुए अभ्युदय एवं नि:श्रेयश की प्राप्ति कर सके। इसीलिए परम कारुणिक परमात्मा ने अपने अमृतपुत्रों के लिए वेद का ज्ञान आदि सृष्टि में **(सर्वेषाम तु नामानि कर्माणि च पृथक-पृथक। वेदशब्देभ्य: एव आदौ निर्मित स: ईश्वर: मनुस्मृति)** प्रदान किया जिससे मानवमात्र ज्ञान-कर्म को जानकर इस लोक में अपना जीवन सार्थक कर सके। गीता के अध्याय 3 श्लोक 15 में कहा गया है कि **''कर्म ब्रम्होद्‌भवं विद्धि ब्रह्मक्षर समुद्भवम्। तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्''** अर्थात् कर्म विधान को तू वेद से उत्पन्न जान तथा वेद को अविनाशी परमात्मा से उत्पन्न हुआ जान। वेद को ज्ञान, कर्म, उपासना एवं विज्ञान का आदि मूल कह कर सभी ऋषियों वे वेद: अखिल: धर्म मूलम तथा धर्म जिज्ञासमानाम् प्रमाणं परमं श्रुति: घोषणा की है। वही ज्ञान मंदाकिनी योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण के मुख से गीता के रूप में नि:सृत हुई। गीता तो विश्व मानव के लिए अनन्य कर्म शास्त्र है। इसका मुख्य प्रतिपाद्य कर्म ही है। वस्तुत: शास्त्रों में कर्म शब्द का प्रयोग शास्त्र अनुमोदित कर्म के लिए ही किया गया है। सदैव से मानव समाज कर्म क्या है, निषिद्ध कर्म क्या है, कौन से कर्म आचरणीय हैं, कौन से कर्म न करने योग्य हें- इसके निश्चय में दिग्भ्रान्त रहा हैं अत: गीता ने इसका परिज्ञान कर्मयोग के माध्यम से कराया है। गीता के अध्याय 4 श्लोक 16 तथा 17 में इस विषय में प्रकाश डाला गया है। **'' किं कर्म किमकर्मेति कवयोपि अत्र मोहिता:। तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यत् ज्ञात्वा मोक्ष्यसे अशुभात्।''** अर्थात् हे अर्जुन कर्म क्या है। और अकर्म क्या है इसका निर्णय करने में विद्वान भी विमोहित हो जाते हैं। इसलिए वह कर्म-तत्व मैं तुझे भलीभाँति समझाकर कहता हूँ, जिसे जानकर तू अशुभ से अर्थात् बंधनरूप पाप कर्मों से मुक्त हो जाएगा। आगे भगवान कृष्णा कहते हैं कि **''कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मण:। अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गति:''**। अर्थात् कर्म का स्वरूप भी जानना चाहिए और अकर्म का स्वरूप भी जानना चाहिए तथा विकर्म का स्वरूप भी जानना चाहिए, क्योंकि कर्म की गति गहन है। यहाँ कर्म के तीन प्रकार बतलाए गए हैं। चूंकि कर्म का ज्ञान गहन एवं गूढ़ है अत: तीनों के स्वरुप को गीता ने स्पष्ट कर दिया है और कहा कि कर्म के तीनों स्वरूपों को जानना चाहिए। संसार में यह देखने में आता है कि मानव सत्य, ज्ञान, कर्म के बोध हेतु निरंतर प्रयासरत रहता है परन्तु पहले तो सत्य का ज्ञान नहीं होता। किसी

कवि ने क्या खूब कहा है जब सारा जीवन बीत गया वनवासी सा गाते-रोते। तब पता चला जानकी को कि सोने के हिरण नहीं होते। एक सत्य को जानने में पूरा जीवन निकल जाता है। वस्तुत: सत्य को जानना कठिन, जान ले तो गाना कठिन, मान ले तो चलना कठिन तथा चल ले तो चलाना कठिन है अत: गीता उसी सत्य को उजागर करती है क्योंकि बिना सत्य को जाने धर्म-कर्म के स्वरूप का परिज्ञान भी नहीं होता। वास्तव में धर्म अर्थात् करणीय कर्तव्यों का निर्धारण तो सत्य के अनुसार ही होता है। जो सत्य है वही धर्म है नहि सत्यात् परो धर्म: न अनृतात पातकम् परम। गीता ने मनुष्य के करणीय कर्तव्यो अर्थात् धर्म के लिए कर्म का विधान किया है। वस्तुत: शास्त्र विहित कर्मो का आचरण ही कर्म है। मनुष्य को जीवन में अनेक धर्मों अर्थात् कर्तव्यों का पालन करना होता है और उन धर्मो के निष्पादन हेतु जो कर्म करने पड़ते हैं उन्हें ही कर्म अर्थात् कर्तव्यों का पालन करना होता है और उन धर्मो के निष्पादन हेतु जो कर्म करने पड़ते हैं उन्हे ही कर्म अर्थात् शास्त्र अनुमोदित कर्म की संज्ञा दी गई है और इन्ही कर्मो को करने के लिए वेद तथा गीतादि आर्ष ग्रंथो में कुर्वनेवेह कर्माणि (यजुर्वेद) तथा योगस्थ कुरु कर्माणि जैसे उपदेश दिए गए हैं। गीता में यह स्पष्ट घोषणा है कि **''य: शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारत:। न स सिद्धिमवाप्तोति न सुखं न परां गतिम्'** अर्थात् जो पुरुष शास्त्र विधि को त्यागकर अपनी इच्छा से मनमाना आचरण करता है, वह न तो सिद्धि को प्राप्त होता और न परमगति को और न सुख को ही प्राप्त होता है। वस्तुत: धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति हेतु जिन कर्मो का विधान शास्त्र में विहित है उन्हे ही गीता में कर्म कहा गया है। दूसरा शब्द विकर्म है जिसका अभिप्राय है वितरीत कर्म या निषिद्ध कर्म या वे कर्म जिन्हे करने से शास्त्र ने मना किया है। **'मा गृध: कस्यस्वितधनम् (यजु.) तथा 'काम: क्रोधस्तथा लोभ: तस्मात एतत् त्रयं त्यजेत'** (गीता अध्याय 6 श्लोक 21) आदि शास्त्र वचन विकर्म (हिंसा, असत्य, चोरी, जारी, क्रोध, मदिरा सेवन आदि। के उदाहरण हैं तथा वेदादि शास्त्रों में इनका निषेध किया गया है। गीता ने तीसरे प्रकार के कर्म का स्वरूप अकर्म को बतलाया है तथा ये वे कर्म हैं जिन्हे निष्काम कर्म कहा जाता है जो फल की कामना से रहित तथा कर्त्ता के अहंकार रहित कर्म हैं। इस संबंध में गीता (अध्याय 4 श्लोक 19) का प्रमाण दृष्टव्य है-**''यस्य सर्वे समारम्भा: काम संकल्प वर्जिता:।** ज्ञानाग्निदग्ध कर्माणं तमाहु: पंडितं बुधा:।। अर्थात जिसके संपूर्ण शास्त्र सम्मत कर्म बिना कामना और संकल्प के होते हैं तथा जिसके संपूर्ण कर्म ज्ञानरूपी अग्नि में परिशुद्ध हो गए हैं उसे पुरुष को ज्ञानी जन पंडित कहते हैं। इस प्रकार धर्मशील एवं अध्यात्म प्रेमियों को गीता में प्रतिपादित कर्म, विकर्म एवं अकर्म के तीनों स्वरूपों को जानकर ही कर्म संतरण में उतरना चाहिए क्योंकि शास्त्र विधि को त्याग करके मनमाने रीति से किए गए कर्म अन्तत: दुख परिणाम वाले होते हैं। इसी से भगवान श्री कृष्ण ने कर्मयोग का प्रतिपादन किया कि समस्त मानव को कर्म का यथार्थ बोध हो सके और वह शास्त्र विहित कर्मो को करके अभ्युदय एवं नि:श्रेयस को प्राप्त हो सके।

आश्रम द्वारा प्रकाशित
महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

प्राप्ति स्थान : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जि. झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

दूरभाष : 01276-230195 **चलभाष** : 09416054195

गणतन्त्र वीर विनायक दामोदर सावरकर की 130वीं जयंती (28 मई)

गांधीवादी कांग्रेस तथा सावरकरवादी हिन्दू महासभा के बारे में जानने योग्य तथ्य

कांग्रेस देश की सबसे पुरानी पार्टी है जबकि हिन्दू महासभा 1915 में बनी। दोनों में क्या अन्तर है। निम्न को पढ़े और जाने:-

कांग्रेस

1. इसके संस्थापक पूर्व जिलाधीश ईसाई धर्मावलम्बी विदेशील मूल के श्री ए. ओ. ह्यूम थे।
2. इसके ध्वज में भगवा रंग 33 प्रतिशत है।
3. यह गांधी जी व नेहरू जी के स्वपनों का खिचड़ी भारत बनाने की समर्थक रही है।
4. इसके नेताओं को देश का नाम भारत व इंडिया पसंद है।
5. इसके नेता भारत विभजन के लिए सहमत हो गए थे।
6. गांधी जी की सोच थी कि मुस्लिमों के सहयोग से ही स्वतन्त्रता मिल सकती है।
7. इसके नेता पाकिस्तान से जनसंख्या की अदला-बदली नहीं चाहते थे।
8. इसके नेताओं ने विभाजन के दोषियों को अल्संख्यक मानकर मताधिकार व विशेषाधिकार दे दिए।
9. इसके नेता मुगलकाल में भ्रष्ट किए गए मन्दिरों का निर्णय अदालत से कराना चाहते हैं।
10. देश में अल्संख्यक तृष्टीकरण चरम सीमा पर है। अल्पसंख्यक शेर की भांति आक्रामक हो गए हैं, जिनसे पुलिस भी डरती है। हिन्दु बचावकारी की भूमिका निभाता है।
11. यह स्वैच्छिक परिवार नियोजन की समर्थक है।
12. यह हिन्दू के हित को साम्प्रदायिक मानती है। दंगो को शुरू करने वाले अल्पसंख्यकों का पक्ष लेती है।
13. यह अल्पसंख्यक आयोग को बनाए रखना चाहती है।
14. 1990 से कश्मीर हिन्दू तथा 1997 से मिजोरम के हिन्दू सरकारी शिविरों में क्रमश: 22 वर्षो से तथा 15 वर्षो से शरणार्थी के रूप में रहे हैं। जिनके पुर्नवास के लिए कोई प्रयास नहीं किए जा रहे हैं।
15. देश में अघोषित अहिन्दू राज्य का वातावरण बना है।

हिन्दू महासभा

1. इसके संस्थापक प्रखर राष्ट्रवादी भाई परमानन्द-स्वामी श्रद्धानन्द तथा मदन मोहन मालवीय थे।
2. इसका ध्वज 100 प्रतिशत भगवे रंग का है।
3. यह भाई परमानन्द और वीर सावरकर के स्वप्नों का हिन्दूराष्ट्र बनाना चाहती है।
4. इसके नेता चाहते हैं कि देश का नाम हिन्दुस्तान हो।
5. इसके नेता अभी तक अखण्ड हिन्दुस्थान के समर्थक है।
6. वीर सावरकर की मान्यता थी कि बिना मुस्लिमों के सहयोग से भी देश स्वतन्त्र हो सकता है।
7. इसके नेता विभाजन के बाद जनसंख्या की पूर्ण रूप से अदला बदली के पक्ष में थे।
8. इसके नेता विभाजन के दोषियों को द्वितीय श्रेणी का नागरिक मानकर मताधिकार कतई नहीं देना चाहते हैं।
9. मुगल काल में 3032 छोटे बड़े मन्दिर भ्रष्ट किए गए थे। जिन्हें देश के स्वतन्त्र होते ही हिन्दू समाज को इसके नेता दिलाना चाहते थे।
10. इसके नेता चाहते हैं कि हिन्दू का सैनिकीकरण हो और वह आक्रमक सोच की मानसिकता रखे और शान से रहे।
11. यह अनिवार्य परिवार नियोजन की समर्थक है।
12. यह हिन्दू के आंसू पोंछना चाहती है जो 1300 सालों से मार खा रहा है और दंगो में अभी भी मिटता है।
13. तथाकथित हिन्दू हृदय सम्राट अटल बिहारी बाजपेयी द्वारा बनवाए गए इस आयोग को यह भंग करना चाहती है।
14. स्वतन्त्र भारत में, हिन्दू शरणार्थी के रूप में शिविरों में नरकीय जीवन बिताए, यह कितनी शर्म की बात है। इनका पुनर्वास शीघ्र होना चाहिए।
15. देश में हिन्दू राष्ट्र जैसा वातावरण होना चाहिए।

हिन्दू को सावधान किया जाता है कि वह जागे! अन्यथा मुसीबत आने वाली है। आपकी क्या सोच है? लिखे। -सावरकर वाद प्रचार सभा, 26 के.पी. रोड, बुलन्दशहर, उ.प्र., मो. 08958778443

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

अर्बन लैन्ड मैनेजमैन्ट प्रा. लि., गुड़गांव	5100
कुमारी प्रवीण विशाखा एन्कलेव, रोहिणी, दिल्ली	5100
डा. किशनचन्द जी विकासपुरी, दिल्ली	5000
जन कल्याण ट्रस्ट प्रीतविहार, दिल्ली	5000
अग्निहोत्री धर्मार्थ ट्रस्ट जवाहर नगर, दिल्ली	5000
दर्शनकुमार जी अग्निहोत्री रानी झांसी रोड, नई दिल्ली	5000
महर्षि दयानन्द एजुकेशनल सोसायटी, झड़िसा, गुड़गांव	3100
श्री सुरेन्द्र कुमार जी दलाल मांडोठी	2100
कुमारी अन्नपूर्णा भट्टाचार्य सैक्टर-13, रोहिणी, दिल्ली	2100
निर्मला देवी पत्नी स्व. श्री नत्थुराम शर्मा, बहादुरगढ़	2000
श्री सुरेश कुमार जी अग्रवाल, अग्रवाल ट्रेडिंग कम्पनी,बहादुरगढ़	1100
श्री मांगेराम जी सुपुत्र माता हंसो देवी निजामपुर, दिल्ली	1100
श्री शक्ति नन्दन भट्टाचार्य रोहिणी, दिल्ली	1100
श्री अनिल आर्य सुपुत्र श्री सत्यपाल जी विद्यालंकार, बहा.	1100
श्री रामकिशन दास एण्ड सन्स अनाज मण्डीगढ़	1100
चौ. राजपाल सु. श्री दफेदार सुल्तान ओहल्याणगढ़ी सांपला रोहतक	1111
रामदुलारी बंसल वैदिक वृद्घाश्रम बहादुरगढ़	1000
हेजल बरेजा, गुड़गांव	1000
अशोक सिसौदिया वैदिक वृद्धाश्रम, बहादुरगढ़	1000
श्री जीतराम आर्य जी निजामपुर दिल्ली	700
श्री रोशनलाल जी लालचन्द कॉलोनी, बहादुरगढ़	550
श्री रामधन जी धनखड़, सैक्टर बहादुरगढ़	505
श्री सुखवीर सिंह जी प्रधान ट्रक यूनियन, बहादुरगढ़	500
श्री सत्येन्द्र सिंह निजामपुर, दिल्ली	500
संदीप आर्य विवेकानन्द नगर, बहादुरगढ़	500
श्री राजीव जी ओमैक्स बहादुरगढ़	500
श्री सुखवीर सिंह बी.एस.एम. ऑटो मार्किट, बहादुरगढ़	500
श्री राकेश पीरागढ़ी (ओल्ड ट्रक सैल्स डीलर)	500

विविध वस्तुएं प्राप्त

उमेद सिंह डरोलिया काठमण्डी, बहादुरगढ़ — 100 किलो चावल

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं–

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

श्रीमती चारू राजौरी गार्डन, दिल्ली	2 बोरी गेहूं
श्री रविन्द्र कुमार राजौरी गार्डन, दिल्ली	2 बोरी गेहूं
श्रीमती ऋतु राजौरी गार्डन, दिल्ली	2 बोरी गेहूं
श्रीमती राजकुमारी, राजौरी गार्डन, दिल्ली	1 बोरी गेहूं
श्री सिद्धार्थ प्रियंका, राजौरी गार्डन, दिल्ली	1 बोरी गेह
श्रीमती अरूणा बजाज, राजौरी गार्डन, दिल्ली	1 बोरी गेहूं,
फरिश्ता सोप एण्ड चरखा कैमिकल्स, पंजाबी बाग	2 पेटी साबुन, 200/-

गऊशाला हेतु

श्री सुरेश कुमार सतगुरु मारवल बराही रोड, बहादुरगढ़	500
श्री देवानन्द जी सुपुत्र रघुवीर सिंह जी गुभाना, झज्जर	4100
श्री उमेद सिंह जी डरोलिया काठमण्डी, बहादुरगढ़	50 किलो दलिया
श्री ईश्वरचन्द हलवाई काठमण्डी, बहादुरगढ़	600/-, 10 कि. गुड़
श्री तरूण काबरा मॉडल टाऊन, बहादुरगढ़	500
बबीता देवी विवेकानन्द नगर, बहादुरगढ़	1100
आभा भट्टाचार्य सैक्टर-13, रोहिणी दिल्ली	500
निर्मला देवी पत्नी श्री नत्थुराम शर्मा बहादुरगढ़	1100

भोजनार्थ प्राप्त दान

कबीर आश्रम, लाईनपार, बहादुरगढ़ — 1 समय का विशिष्ट भोजन, साबुन, पैन तथा कॉपियां

श्रीमती कृष्णा देवी हिसारवाली द्वारा कबीर आश्रम लाइनपार — 1 समय का विशिष्ट भोजन

श्री चन्द्रभान चौधरी (पूर्व डी.सी.पी.) द्वारा एकत्रित दान राशि

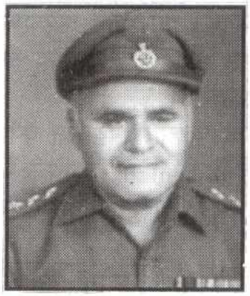

श्रीमती चन्द्रकला जी राजपाल, पश्चिम विहार, नई दिल्ली	500/-
श्रीमती सुभाषनी आर्या पश्चिम विहार, नई दिल्ली	250/-
डा. पुष्पलता वर्मा जी विकासपुरी, नई दिल्ली	250/-
श्री शिवम आनन्द जी, द्वारका, नई दिल्ली	250/-

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548504, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 मई 2013 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम उद्घाटन समारोह की झलकियां

(विवरण पढ़े पृष्ठ 5 पर)

आत्म – शुद्धि – पथ मासिक

मई 2013

छपी पुस्तक – पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2012-14

प्रेषक – आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में –

आश्रम में कमरे निर्माण हेतु दानियों को सम्मानित किया गया

पूज्य माता कृष्णा झाम के आशीर्वाद से श्री अमरीश जी झाम ने अखेराम सरदारा देवी, आत्मशुद्धि आश्रम, फर्रूखनगर में एक कमरे (किंचन, शौचालय सहित) निर्माण के लिए 2.50 लाख रूपये दान दिए। आश्रम की ओर से श्री अमरीश झाम तथा उनकी माता जी को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

श्री विरेन्द्र जी आर्य, दौलतावाद, गुड़गांव ने अखेराम सरदारो देवी, आत्मशुद्धि आश्रम, फर्रूखनगर में एक कमरे (किंचन, शौचालय सहित) निर्माण के लिए 2.50 लाख रूपये दान दिए। आश्रम की ओर से श्री विरेन्द्र आर्य जी और उनके सुपुत्र चि. मनजीत आर्य को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

श्रीमती ब्रह्मदेवी धर्मपत्नी मा. हरी सिंह, जमालपुर, गुड़गांव ने अखेराम सरदारा देवी, आत्मशुद्धि आश्रम, फर्रूखनगर में साधना कक्ष निर्माण के लिए 1 लाख रूपये दान दिए। उन्हें स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

वानप्रस्थी ईशमुनि आश्रमभूमि दाता ने अपने पूज्य दादा शिव सहाय की पूण्य स्मृति में अखेराम सरदारा देवी, आत्मशुद्धि आश्रम, फर्रूखनगर में साधना कक्ष निर्माण के लिए 1 लाख रूपये दान दिए। उनका पुष्पमालाओं से सम्मानित किया गया।